

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

n वर्ष : 10 अंक : 116

■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19

जयपुर, सोमवार 19 मई, 2025

■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162

■ मूल्य : 1.5 रुपए

■ पृष्ठ : 8

jaipurtimes.org

twitter.com/JaipurTimes2

facebook.com/dainikjaipurtimes

youtube.com/c/JaipurTimes

instagram.com/jaipurtimesjt

अहमदाबाद से गृह मंत्री का पाकिस्तान को दो दूक संदेश

जयपुर टाइम्स

अहमदाबाद(निस.)।। आतंक और व्यापार एक साथ नहीं चल सकते। उक्त उद्गार रविवार को केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुजरात के अहमदाबाद में व्यक्त किए। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को अहमदाबाद में अहमदाबाद नगर निगम की विभिन्न विकास परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास किया। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सैन्य बल की कार्रवाई की प्रशंसा की। साथ ही पाकिस्तान को करारा जवाब दिया। उन्होंने कहा कि आतंक और व्यापार एक साथ नहीं चल सकते। यदि उसने आतंकवाद नहीं रोका तो सिंधु नदी से एक बूंद पानी नहीं मिलेगा। हमने पाकिस्तान को करारा जवाब दिया है। उसके एयरबेस तबाह कर दिए। अमित शाह ने कहा कि जब पीएम मोदी ने देश को



संबोधित किया तो उन्होंने साफ कर दिया था कि खून और पानी एक साथ नहीं बहेगा। पड़ोसी देश को चेतावनी देते हुए शाह ने कहा कि आतंक का कारोबार रोकने तक

वह सिंधु के पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस जाएगा। आतंकवाद और व्यापार एक साथ नहीं चल सकते। यदि आप आतंकवाद को पनाह देना चाहते हैं तो तमाम कारोबार

खत्म कर दीजिए। शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री ने कहा था कि अगर पाकिस्तान के साथ बात होगी तो वह पीओके (पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर) को वापस लेने और आतंकवाद को खत्म करने को लेकर ही होंगी। इससे पहले केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को सेनाओं के सम्मान में गुजरात के अहमदाबाद में तिरंगा यात्रा की अगुवाई की। इस दौरान उमड़ी भीड़ के बीच अमित शाह राष्ट्र ध्वज धामे जुलूस के आगे चलते दिखे। गृह मंत्री तिरंगा धामे हुए नल सरोवर चौकड़ी से एकलिंगजी रोड पर महाराणा प्रताप चौक तक पैदल चले। यहां उन्होंने 16वीं सदी के महान योद्धा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। पैदल मार्च में हिस्सा लेने वालों में गुजरात के गृह राज्य मंत्री हर्ष सांघवी, स्थानीय विधायक, भाजपा नेता और कार्यकर्ता और यहां के शिक्षक और

प्राथमिक व माध्यमिक विभागों के पदाधिकारी शामिल रहे। गुजरात भाजपा ने कहा कि यात्रा में साणंद और आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग, सामाजिक और राजनीतिक नेता तिरंगा यात्रा में शामिल हुए और भारत माता की जय के नारे लगाए तथा सशस्त्र बलों के साहस और वीरता को सलाम किया। ऑपरेशन सिंदूर के बाद देशभर में भाजपा की ओर से सेना के सम्मान में तिरंगा यात्रा निकाली जा रही है। इससे पहले अहमदाबाद में अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के अवसर पर आयोजित 'सहकारी महासम्मेलन' में अमित शाह ने कहा कि केंद्र सरकार ने प्राथमिक कृषि ऋण समितियां (पैक्स) को वित्तीय रूप से मजबूत बनाने के लिए कई अहम कदम उठाये हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि जल्द ही नए पैक्स के पंजीकरण के लिए नीति लागूगी।

झुलसाने वाली भीषण गर्मी से तपा राजस्थान



जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास.)। राजस्थान में गर्मी का प्रकोप अपने चरम पर है। प्रदेश में अधिकतम तापमान का स्तर 46 डिग्री तक पहुंच गया है। हालांकि अप्रैल के अंत में प्रदेश का पारा 47 डिग्री को छू गया था। मौसम विभाग का कहना है कि अगले 24 घंटों में पारे का मिजाज और बढ़ सकता है। दिन के साथ रातें भी झुलसा रही हैं। रात्रि के समय भी कई जिलों में पारा 30 डिग्री से अधिक पहुंच गया है। सर्वाधिक न्यूनतम तापमान गंगानगर में 31.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। वहीं, कई अन्य शहरों में भी न्यूनतम तापमान का स्तर 30 डिग्री से अधिक रहा। बीते

24 घंटों में राजस्थान में गंगानगर सबसे गर्म शहर रहा। यहां अधिकतम तापमान 46 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। प्रदेश के ज्यादातर शहरों में अधिकतम पारा 42 से 44 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा। मौसम विभाग का कहना है कि अगले 24 घंटों में राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्र जोधपुर तथा बीकानेर में धूल भरी हवाएं चलेंगी और हीट वेव का भी जबरदस्त असर देखने को मिलेगा। सीमावर्ती जिलों में पारा 45 से 46 डिग्री के आस-पास रह सकता है। वहीं राज्य के उत्तरी भागों में 19 और 20 मई को मेघगर्जन के साथ हल्की वर्षा होने की संभावना है। वहीं बीकानेर, गंगानगर में हीट वेव की चेतावनी जारी की गई है।

मदन राठौड़ और पीपी चौधरी को मिलेगा संसद रत्न पुरस्कार

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास.)। भाजपा राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष और राज्यसभा सांसद मदन राठौड़ और पाली सांसद पीपी चौधरी को संसद रत्न पुरस्कार मिलने जा रहा है। प्राइम प्वाइंट फ़ाउंडेशन की ओर से संसद रत्न पुरस्कार 2025 की घोषणा की गई है। इन सांसदों का चयन संसद में इनकी ओर से पूछे गए प्रश्न और डिबेट में इनकी भागीदारी को लेकर हुआ है। इनके साथ ही देश के कुल 17 सांसदों और संसद की दो स्थाई समितियों के सदस्यों को यह पुरस्कार दिया जाएगा। इन सांसदों का चयन जूरी कमिटी की ओर से किया गया है। इसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष हंसराज गंगाराम अहिर ने की थी। कमिटी ने महाराष्ट्र के 7, उत्तरप्रदेश, झारखंड, राजस्थान के 2 और उड़ीसा, तमिलनाडु, केरल और असम के एक-एक सांसदों का चयन किया है। बता दें कि इन सांसदों का चयन संसद में इनकी मौजूदगी, पूछे गए



सवालों और डिबेट में इनकी भागीदारी के आधार पर किया गया है। इसके लिए जूरी कमिटी ने लोकसभा और राज्यसभा सचिवालय के ऑफिशल रिकॉर्ड का उपयोग किया है। मदन राठौड़ और पीपी चौधरी का चयन 18 वीं लोकसभा की पहली बैठक से लेकर बजट सत्र 2025 तक उनके संसदीय प्रदर्शन के आधार पर किया गया है। यह पुरस्कार जुलाई के अंतिम सप्ताह में नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा।

भारत का एक और दुश्मन ढेर

लश्कर-ए-तैयबा के डिप्टी चीफ आतंकी सैफुल्लाह खालिद की गोली मारकर हत्या

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी.)।। आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा का डिप्टी चीफ आतंकी सैफुल्लाह खालिद की पाकिस्तान में हत्या कर दी गई। एक रिपोर्ट के मुताबिक, अज्ञात हमलावरों ने उसे गोली मार दी। वो लश्कर के संस्थापक आतंकी हाफिज सईद का बेहद करीबी था। जानकारी के मुताबिक, मटली शहर में जैसे ही वो अपने घर के बाहर निकला, हमलावरों ने उसके सिर और सीने पर गोली मार दी। काबिले गौर है कि यह आतंकी भारत में हुए तीन हमलों में शामिल था। उसने महाराष्ट्र के नागपुर में आरएसएस मुख्यालय में साल 2006 में हमले की साजिश रची थी। साल 2001 में रामपुर में सीआरपीएफ कैंप में हुए हमले और बंगलौर में 2005 में हुए हमले में वो शामिल था। खालिद विनोद कुमार के फर्जी नाम से



कई सालों तक नेपाल में छिपा रहा था। खालिद ने अपना ठिकाना पाकिस्तान के सिंध प्रांत के बदीन जिले के मटली में बना लिया था। वहां वह लश्कर-ए-तैयबा और उसके मुखौटा संगठन जमात-उद-दावा के लिए काम करता रहा, जिसका मुख्य काम आतंकी अभियानों के लिए भर्ती और धन उगाही करना था।

एक भी गोली चली तो सीजफायर जारी रखना मुश्किल: सेना

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी.)।। ऑपरेशन सिंदूर के बाद सैन्य टकराव को दालने के लिए भारत और पाकिस्तान के बीच 10 मई को सीजफायर पर बनी सहमति अभी कायम रहेगी। भारतीय सेना ने कहा कि दोनों देशों के डीजीएमओ के बीच रविवार को कोई बातचीत प्रस्तावित नहीं थी मगर इस सीजफायर को किसी निर्धारित समयसीमा में नहीं बांधा गया है। सीजफायर जारी रहने की घोषणा से साफ है कि भारत सैन्य टकराव को स्थाई विराम देने की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए नियंत्रण रेखा और अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर विश्वास बहाली के विकल्पों पर ठोक-बजाकर कदम उठाना चाहता है। एलओसी और अंतर्राष्ट्रीय सीमा एक भी गोली नहीं चलाने या निरुपस्थ फायरिंग को सीजफायर कायम रहने की अनिवार्य शर्त बनाया गया है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत-पाकिस्तान के डीजीएमओ के बीच 12 मई को हुई दूसरी बातचीत में सीमा के अग्रिम मोर्चों से सैनिकों की संख्या घटाने के साथ-साथ सीजफायर कायम रखने के लिए दोनों



तरफ से एक भी गोली नहीं चलाए जाने की बात कही गई थी। भारतीय सेना के डीजीएमओ लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई ने

अपने पाकिस्तानी समकक्ष को बेलाग बता दिया था कि उस पार से एक भी गोली चली तो सीजफायर को कायम रखना मुश्किल

होगा। इस सख्त चेतावनी का ही असर है कि 10 मई के बाद एलओसी और अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर दोनों ओर से कोई भी

गोलीबारी की खबर अब तक नहीं आई है। सेना के सूत्रों की ओर से भी पुष्टि की गई है कि सीजफायर प्रभावी होने के बाद से सीमा पर किसी तरह की फायरिंग नहीं हुई है। सीजफायर को बनाए रखने पर दूसरी बैठक में बनी सहमति के बाद ही संकेत दिए गए थे कि 18 मई को भारत और पाकिस्तान के डीजीएमओ के बीच संभवत बातचीत में इसकी समीक्षा की जाएगी। इस वार्ता को लेकर मीडिया में बड़ी सुर्खियों को देखते हुए रविवार को सेना की ओर से कहा गया कि भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम के रविवार को समाप्त होने की बात सही नहीं है। दोनों देशों के डीजीएमओ के बीच कोई वार्ता निर्धारित नहीं है। जहां तक 12 मई को डीजीएमओ की बातचीत में तय किए गए युद्ध विराम के जारी रहने का सवाल है, इसकी कोई समाप्ति तिथि नहीं है। वैसे भारत और पाकिस्तान के डीजीएमओ के बीच प्रत्येक मंगलवार को हाटलाइन पर बातचीत की स्थापित व्यवस्था है और ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि इसके अनुरूप ही 20 मई को सीजफायर के संरूप को आगे बढ़ाने के लिए अगले दौर की बातचीत होगी।

जयपुर टाइम्स

बांसवाड़ा(निस.)।। बांसवाड़ा-उदयपुर मार्ग पर इंगरपुर जिले के पिंडावल के समीप शनिवार रात एक ट्रक जीप पर जा पलटा। हादसे में जीप में 4 लोगों की मौतें पर ही मौत हो गई। जीप में सवार लोग एक शादी समारोह से अपने घर लौट रहे थे, इससे शादी की खुशियां मातम में बदल गई। रविवार तड़के मशक्कत के बाद चारों शवों को बाहर निकाला जा सका। साबला थानाधिकारी

रघुवीर सिंह ने बताया कि पिंडावल गांव में एक शादी समारोह में सम्मिलित होकर एक परिवार के लोग जीप से वापस अपने गांव लौट रहे थे कि रास्ते में अचानक जीप दुर्घटनाग्रस्त हो गई। कुछ ग्रामीण मौके पर पहुंचकर घायलों को संभाल रहे थे और सूचना मिलने के बाद एंबुलेंस भी पहुंच गई थी, इसी दौरान अचानक तेज गति से आया एक ट्रक जीप और मौके पर खड़े लोगों पर पलट गया, इससे 4 लोगों की मौत हो गई और 8 लोग घायल हो गए।

कांग्रेस विधायक ने बांधे सीएम की तारीफों के पुल

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा है 'कलियुग के देवता'

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस.)। कांग्रेस विधायक श्रवण कुमार ने सीएम भजनलाल शर्मा की प्रशंसा कर राजनीति में असामान्य सौहार्द की मिसाल कायम की है। श्रवण ने शर्मा को 'कलियुग का देवता' कहते हुए उनके कार्यों की सराहना की। यह बातचीत सोशल मीडिया पर वायरल हुई। राजनीति में ऐसा कम ही देखने को मिलता है कि एक दल दूसरे दल के नेताओं की खुलकर तारीफ करते हो। यह दुर्लभ होता है। राजस्थान में ऐसे ही मामला देखने को मिला जहां कांग्रेस

के विधायक श्रवण कुमार ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की खुलकर तारीफ की है।दरअसल झुंझुनू जिले के सूरजगढ़ विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के विधायक श्रवण कुमार ने सीएम भजनलाल को 'कलियुग' का देवता बताया है। कांग्रेस विधायक ने कहा कि आपने जो कार्य किए, धरती पर कोई नहीं कर सकता। मैं जीवनभर आपका आभारी रहूंगा। सीएम और विधायक श्रवण कुमार की बातचीत का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जो सियासत में चर्चा का विषय बना हुआ है।

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने किया प्रदर्शनी का अवलोकन

जयपुर में रंगरीत कला महोत्सव, देशभर के कलाकारों ने दिखाया हुनर

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास.)। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने रविवार को जयपुर के जवाहर कला केंद्र में आयोजित रंगरीत कला महोत्सव में शानदार चित्र प्रदर्शनी का दौरा किया। इस प्रदर्शनी में देश के कोने-कोने से आए कलाकारों ने पारंपरिक लघु चित्रकला की खूबसूरती पेश की थी। उपमुख्यमंत्री ने कलाकारों की कला को दिल से सराहा और इसे भारतीय संस्कृति का अनमोल खजाना बताया।

पारंपरिक कला का अनोखा संगम

यह प्रदर्शनी भारतीय संस्कृति की विविधता को दर्शाने का एक खास प्रयास है। यहां दुर्गा सप्तशती,



वेद, रामायण और महाभारत जैसे पवित्र ग्रंथों पर बनीं तस्वीरें प्रदर्शित की गईं। इन चित्रों में गोल्ड लोफ, 24 कैरेट सोने का रंग (हिलकारी), खनिज, पत्थर, धातु और रासायनिक रंगों का इस्तेमाल हुआ। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि ये चित्र देखकर मन को सुकून और प्रेरणा मिलती है।

कलाकारों को मिला प्रोत्साहन

देशभर से आए कलाकारों ने अपनी कला से सभी का दिल जीत लिया। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि यह महोत्सव कलाकारों को नई प्रेरणा देगा और उन्हें प्रतिस्पर्धा के लिए प्रोत्साहित करेगा। उन्होंने सभी कलाकारों को बधाई दी और उनके प्रयासों की तारीफ की।

लाइव प्रदर्शन और कार्यशालाओं का आकर्षण

महोत्सव में लाइव चित्रकला, कार्यशालाएं और संगोष्ठियां भी आयोजित हुईं। इनमें पुरानी चित्रकला शैलियों को जीवंत रखने के साथ-साथ नए कलाकारों को सीखने का मौका मिला। प्रदर्शनी में चित्र बनाने की शुरुआत से लेकर अंत तक की पूरी प्रक्रिया को समझने का अवसर भी दिया गया।

सरकार का कला संरक्षण में योगदान

उपमुख्यमंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में पारंपरिक कलाओं और कलाकारों को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चल रही हैं। यह महोत्सव इन प्रयासों को और मजबूत करता है। इस मौके पर दिया कुमारी ने सभी प्रदेशवासियों को अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह दिन हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संजोने की प्रेरणा देता है। यह महोत्सव न केवल कला प्रेमियों के लिए बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणादायक है जो भारतीय संस्कृति से प्यार करता है।

सैनी युवा महासभा की बैठक आयोजित



जयपुर टाइम्स

अलवर(निर्स.)। अलवर जिला सैनी युवा महासभा की बैठक पंचवटी अलवर स्थित कार्यालय पर आयोजित की गई। बैठक की शुरुआत पंचवटी पार्क में गर्मी को देखते हुए पक्षियों के लिये परिण्डे लगा कर की गई। बैठक की अध्यक्षता अलवर जिला सैनी युवा महासभा अध्यक्ष डॉ. संदीप सैनी ने की अध्यक्ष डॉ संदीप सैनी ने बताया की बैठक में समाज के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई जिसमें समाज की महिलाओं के उत्थान के लिए उन्हें सिलाई प्रशिक्षण एवं मेहनदी प्रशिक्षण शिविर लगाकर प्रशिक्षण देकर सक्षम बनाया जायेगा। समाज के बच्चों के लिये शिक्षण सामग्री वितरित करना, चित्रकला प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित तथा खेल प्रतियोगिताओं का समय-समय पर आयोजित की जायेगी। जिससे बच्चों में जागृति उत्पन्न हो सके। इस अवसर पर सैनी युवा महासभा अध्यक्ष डॉ संदीप सैनी, जुगल सैनी, लवनीश सैनी, तरुण सैनी, जितेन्द्र सैनी, अनिल सैनी, उमेश सैनी, रवि सैनी, जोनी सैनी, सुबोध सैनी, पंकज सैनी, लोकेश सैनी आदि शामिल रहे।

पृथ्वीराज चौहान की जयंती पर रैली 24 को



जयपुर टाइम्स

अलवर(निर्स.)। करणी सेना के तत्त्वधान में राजपूत समाज द्वारा चक्रवर्ती क्षत्रिय सम्राट पृथ्वीराज चौहान की जयंती के उपलक्ष्य में 24 मई को विशाल रैली का कार्यक्रम रखा गया है। जिसका पोस्टर विमोचन रविनार को राजपूत छात्रावास (अलवर) में सम्पन्न हुआ इस अवसर पे अखिल भारतीय क्षेत्रीय महासभा के प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मेश सिंह, जितेंद्र सिंह राठौर, देवेन्द्र सिंह चौहान अध्यक्ष करणी सेना, उमेद सिंह, विक्रम बनना, उपेंद्र राठौर, रामदेवभाय, भूपेंद्र सिंह राघव, माधवेंद्र सिंह, कपिल नरूका आदि मौजूद रहे।

रक्तदाताओं को किया सम्मानित



जयपुर टाइम्स

अलवर(निर्स.)। डा. गोपाल रॉय चौधरी ट्रस्ट की ओर से राजकीय सामान्य चिकित्सालय में ब्लड बैंक में रक्तदान शिविर लगाया गया जिसमें सभी रक्तदाताओं को सम्मानित किया गया। शिविर में रक्तदान करने वाले रक्तदाताओं का नेक कमाई फाउंडेशन की ओर से स्वागत किया गया और उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान किए। शिविर में समाजसेवी संरक्षक दौलत राम हरजरी, पुरुषार्थी धर्मशाला समिति के जिलाध्यक्ष प्रेम गांधी, रक्तदान को प्रोत्साहित करने वाली बालेटा सीनियर माध्यमिक विद्यालय की प्रिंसिपल संगीता गौड, समाजसेवी परमजीत सिंह तथा जार के जिलाध्यक्ष सुरेंद्र चौहान सहित अभिषेक तनेजा ने रक्तदाताओं को सम्मानित किया। इस शिविर में 51 यूनिट रक्तदान हुआ। ट्रस्ट की ओर से मंजू चौधरी अग्रवाल ने आभार जताया।

नागाजी की गौर के रास्तों पर छाया अंधेरा

अंधेरे से राहगीरों व स्थानीय निवासियों को हो रही भारी परेशानी

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निर्स.) कस्बे के नागाजी की गौर में अधिकांश सड़क लाइटें पिछले कई दिनों से बंद पड़ी हैं। जिससे अंधेरा छाया हुआ है। अंधेरे के कारण आम राहगीरों, स्थानीय निवासियों, विशेषकर महिलाओं व बुजुर्गों को रात्रि में आवागमन में अत्यधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। उक्त क्षेत्र में सीवरेज का कार्य भी जारी है, जिसके कारण सड़कों पर गड्ढे हो गये हैं। अंधेरे में इन गड्ढों के कारण दुर्घटनाएं होने की आशंका बनी रहती है। साथ ही असामाजिक तत्वों की गतिविधियों के बढ़ने का भी भय है, जिससे क्षेत्रवासियों में असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो रही है। स्थानीय निवासी प्रफुल्ल रमन ने बताया कि नगर परिषद् आयुक्त को कई बार लिखित में सूचनायें दी गई है इसके बावजूद भी अधिकारी अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोड़ रहे हैं। नगर परिषद् की लापरवाही का नतीजा स्थानीय निवासी लोगों को भुगतना पड़ रहा है। नागाजी मंदिर के पास शहरी पीएचसी, रमशान रोड, मेघवाल बस्ती, वाल्मीकि बस्ती, नांगल पंडितपुरा रोड, ढाणी श्यामावाली, ढाणी पुराना कुआं व बामनवास रोड पर अधिकांश रोड लाइटें बंद पड़ी हैं। नगर परिषद् आयुक्त द्वारा उक्त समस्या का शीघ्र संज्ञान लेते हुये रोड लाइटों की मरम्मत करवाकर आमजन व स्थानीय निवासियों की राहत प्रदान की जायें।

यह विकास की सरकार नही बल्कि विनाश की सरकार- पूर्व केन्द्रीय मंत्री सिंह

जयपुर टाइम्स

खैरथल/अलवर(निर्स.)।। पूर्व केन्द्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह एवं नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने खैरथल जिला मुख्यालय पर संयुक्त रूप से प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए केंद्र और राज्य सरकार पर जमकर निशाना साधा पूर्व केन्द्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने पत्रकार बार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार बड़ी योजनाओं के केवल सपने दिखाती है, धरातल पर कुछ नहीं है। उन्होंने कहा कि यह सरकार विकास की नहीं बल्कि विनाश की सरकार है उन्होंने कहा कि हरियाणा एवं दिल्ली के भू माफिया का प्रवेश अब खैरथल क्षेत्र में हो गया है उन्होंने कहा कि सरकार स्पष्ट करें जिला मुख्यालय घोषित होने के बाद भी खैरथल जिले के साथ सीतेला व्यवहार क्यों किया जा रहा है उन्होंने कहा कि सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि जिला मुख्यालय पर सरकारी कार्यालय अपने भवन में कब संचालित होंगे ताकि अफवाहों और गरीब की ठगी पर रोक लग सके उन्होंने कहा कि बाहर के भूमाफिया आकर जिला मुख्यालय घोषित होने के बाद यहां जमीनों की बंदर बाट कर रहे हैं उन्होंने



कहा कि अलवर सांसद और केंद्र में मंत्री पीएम के साथ बैठते हैं लेकिन क्षेत्र के लिए उन्होंने क्या किया स्पष्ट करें नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि खैरथल के विकास के लिए पूरा विपक्ष एकजुट होकर सरकार से लड़ाई लड़ेगा उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार का ऐतिहासिक फैसला खैरथल को जिला बनाने की सीगात दी गई। उन्होंने कहा कि राजस्थान प्रदेश की सरकार ने खैरथल को निरस्त करने का पूरी

कार्यवाही की थी लेकिन विपक्ष के दबाव में कैबिनेट नहीं कर पाए उन्होंने कहा कि खैरथल जिला घोषित होने के बाद भूमाफिया जनता को बड़े-बड़े सपने दिखाकर गरीब जनता को लूटने का षड्यंत्र रच रहे हैं उन्होंने आरोप लगाया कि दिल्ली के भूमाफियाओं के साथ कुछ नेता भी शामिल है उन्होंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से कहा कि ऐसे मामलों की निष्पक्ष जांच कर तुरंत संज्ञान लेना चाहिए कहीं

जनता की जमीनों का घोटाला तो नहीं किया जा रहा उन्होंने कहा कि केन्द्रीय मंत्री और अलवर सांसद खैरथल को चंडीगढ़ बनाने का बयान दे रहे थे अब तक क्या प्रयास हुए सरकार के भी पूरे डेढ़ वर्ष हो गए हैं स्पष्ट करें। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों भूमाफियाओं द्वारा चिन्हित की गई जमीनों और पिछले दिनों की गई रजिस्ट्री की जांच होनी चाहिए उन्होंने कहा कि खैरथल को जिला मुख्यालय घोषित हुए दो वर्ष हो चुके

वन मंत्री ने किया वन नाका चौकी कुशालगढ एवं थैक्क्यू बोर्ड का औचक निरीक्षण

अव्यवस्थाओं पर जाहिर की नाराजगी, सफाईकर्मियों की परिवेदनाओं को सुनकर सकारात्मक समाधान के लिए किया आश्वस्त

जयपुर टाइम्स

अलवर(निर्स.)। पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री संजय शर्मा ने शनिवार रात्रि में सरिस्का वन नाका चौकी कुशालगढ एवं थैक्क्यू बोर्ड का औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। वन राज्यमंत्री शर्मा ने वन नाकाओं के औचक निरीक्षण के दौरान निर्देश दिये कि कार्मिक नाका पर अलर्ट रहकर अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करें। उन्होंने कार्मिकों की उपस्थिति पंजीका की जांच करते हुए अनुपस्थित कार्मिकों की गैर हाजिरी लगाई। उन्होंने निर्देश दिये कि नियमित रूप से पंजीका में उपस्थिति दर्ज होने के साथ-साथ अनुपस्थित कार्मिकों के अवकाश का उल्लेख किया जावे। ड्यूटी के प्रति लापरवाही बरतने पर नियमानुसार संबंधित कार्मिक के निरुद्ध कार्रवाई की जावेगी। उन्होंने निर्देश दिये कि कार्यालय परिसर में साफ-सफाई व्यवस्था का विशेष ध्यान रखें। उल्लेखनीय है कि वन मंत्री शर्मा ने 4 मई को भी टहला रेन्ज के वनपाल नाका कुण्डला का औचक निरीक्षण किया था। इस दौरान उन्होंने कार्मिकों की उपस्थिति पंजीका की जांच कर अनुपस्थित कार्मिकों की गैर हाजिरी लगाते हुए कार्मिकों को अनुशासन व जिम्मेदारीपूर्वक अपने दायित्वों के निर्वहन करने के निर्देश दिये।

शहीद पूरे देश का होता है किसी एक दल का व्यक्ति नही - नेता प्रतिपक्ष जूली

शहीद भूपसिंह की प्रतिमा का किया अनावरण

जयपुर टाइम्स

अलवर/बानसूर(निर्स.)। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली बोले जाना तो सबको है लेकिन ऐसा जाना हो कि जब आप जाएं तो पूरा देश, समाज और क्षेत्र गर्व से आपके सम्मान में खड़ा हो उन्होंने कहा कि शहीद पूरे देश का होता है किसी एक दल या व्यक्ति का नहीं जूली रविवार को बानसूर में शहीद भूपसिंह की प्रतिमा अनावरण के दौरान उपस्थित जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के नेताओं की अनुपस्थिति पर जूली बोले कौन आता है और कौन नहीं आता यह उनकी सोच का विषय है लेकिन सैनिक किसी दल या व्यक्ति का नहीं बल्कि पूरे देश का होता है उन्होंने शहीद के पिता बाबुलाल सिरौहवाल का साफा पहनाकर और वीरांगना ममता और माता पतासी देवी का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया कार्यक्रम की शुरुआत बानसूर के अंबेडकर सर्किल से हुई यहां नेता प्रतिपक्ष जूली ने सविधान निर्माता डॉ अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया अंबेडकर सर्किल से कस्बे के मुख्य मार्गों से होते हुए शहीद स्मारक तक तिरंगा रैली का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में आम जन गणमान्य व्यक्ति और शहीद के परिजन शामिल रहे टीकाराम जूली ने राज्य सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि यह सरकार सर्कस सरकार बन चुकी है। मंदिरों के नाम पर



वोट लिए जाते हैं, लेकिन बानसूर जैसे स्थानों पर रात्रि के समय देवी माता के मंदिरों को तोड़ा जा रहा है। एक ओर आस्था की बात करते हैं, दूसरी ओर पुलिस और वन विभाग द्वारा मंदिर ढहा दिया जाता है और डेढ़ सौ से अधिक ग्रामीणों पर केस दर्ज कर दिए जाते हैं उन्होंने आड़फा अवाईस पर खर्च को लेकर भी सरकार की प्राथमिकताओं पर सवाल उठाया उन्होंने कहा कि गोविंद देवजी मंदिर के लिए हमारी सरकार ने 120 करोड़ और श्याम जी के लिए 100 करोड़ रुपये दिए लेकिन वर्तमान सरकार ने इन योजनाओं को नहीं बढ़ाया। वहीं, आड़फा जैसे कार्यक्रमों के लिए एक दिन में 100 करोड़ रुपये मंजूर कर दिए जाते हैं। इस दौरान पूर्व मंत्री शकुंतला रावत, श्री श्री 108 बाबा प्रेम नाथ महाराज, प्रधान सुमन सुभाष यादव, जिला पार्षद रामावतार मीना, ब्लॉक अध्यक्ष कांग्रेस भीम सिंह, महिला कांग्रेस महासचिव गुलाब देवी, सरपंच मोहनलाल, ताराचंद, सुबेसिंह, किशनलाल, धारासिंह सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

पक्षियों के लिये बांधे परिंडे

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निर्स.)। कस्बे के पूतली कट के नजदीक सैन मंदिर में रविवार को श्री सैन मंदिर विकास प्रबंधक एवं समाज उद्यान (रंज.) समिति के सदाधिकारियों द्वारा श्री नारायणी सेना अध्यक्ष ओमप्रकाश सैन के नेतृत्व में धूप की बढ़ती तपन और लू के चलते बेजुबान पक्षियों के लिये परिंडे लगाओ अभियान के अंतर्गत पक्षियों की प्यास बुझाने के लिये मंदिर परिसर में दाना पानी की व्यवस्था

11 परिंडे बांधे गये। अखिल भारतीय सैन मंदिर हरसोरा धाम के प्रधान संजय सैन ने कहा कि हम सबको सामूहिक रूप से तपते मौसम में बेजुबान पक्षियों की परिस्थितियों को समझना चाहिये। इस दौरान बारबर यूनियन प्रधान राधेश्याम सैन फतेहपुरा, आमाशाह बैद्य श्यामलाल सैन पूतली, समिति के कोषाध्यक्ष संजय सैन खेडक्री, भम्भुराम सैन, हरसोरा सचिव राधेश्याम सैन, मानसिंह सैन, मंदिर के पुजारी पं. जगदीश शर्मा समेत अन्य मौजूद रहे।

विधायक ने मुख्यमंत्री आगमन की तैयारी का लिया जायज़ा

बहरोड़ में भव्य तिरंगा यात्रा की तैयारी

जयपुर टाइम्स

बहरोड़(निर्स.)। विधायक डॉ जसवंत यादव की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अलवर आगमन एवं "तिरंगा यात्रा" की तैयारियों को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई बैठक में आयोजन की रूपरेखा, प्रशासनिक समन्वय एवं जनसहभागिता पर विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में भाजपा नेता मोहित यादव भी उपस्थित रहे बैठक में बताया कि आगामी 25 मई को शाम 5:00 बजे बहरोड़ में भव्य तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी, जो पंचमुखी हनुमान मंदिर से प्रारंभ होकर बाजार होते हुए अपकंड रोड तक जाएगी इसमें बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं और आमजन की भागीदारी अपेक्षित है बैठक के पश्चात डॉ. जसवंत यादव ने देवनगर में स्वर्गीय रतनलाल घाँवल एवं सूरजी देवी की मूर्तियों के अनावरण कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने गांव के विकास हेतु विधायक कोष से ₹10 लाख की घोषणा की डॉ. जसवंत यादव ने कहा, क्षेत्र में निरंतर विकास कार्य जारी हैं और जनता उत्साहित



है कि बहरोड़ आगे बढ़ रहा है इस अवसर पर महासिंह चौधरी (जिलाध्यक्ष), रमेश रावत (जिला उपाध्यक्ष), प्रशांत यादव, अरवनी टाडगार, राजू सिंह चौहान, राधेश्याम बोहरा (सभी मंडल अध्यक्ष), संजय मीर, सुनील यादव (पूर्व मंडल अध्यक्ष), पवन यादव, सुमन यादव, डॉ. जगत यादव (मंडल उपाध्यक्ष) सहित अनेक भाजपा कार्यकर्ता एवं पदाधिकारीगण मौजूद रहे।

राष्ट्रीय राजमार्ग पर चलते ट्रैलर में लगी आग, आसपास मचा हड़कंप

ड्राइवर ने समय रहते ट्रैलर से कूदकर बचाई जान, आसपास के लोगों ने आग बुझाने का किया प्रयास

सूचना पर पहुँची फायर ब्रिगेड की टीम ने आग पर पाया काबू, लेकिन तब तक ट्रैलर जलकर हो चुका था खाक

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निर्स.) दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक चलते ट्रैलर में अचानक आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। उक्त हादसा राजमार्ग पर ग्राम कंवरपुरा स्टैंड के पास उस समय हुआ जब ट्रैलर पावटा से कोटपूतली की ओर आ रहा था। प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुसार एक ट्रैलर नं. आर जे 32 डी डी 2040 में अचानक आग भड़क उठी, जिससे चालक को खतरे का आभास हुआ। चालक ने समय रहते सतर्कता दिखाई और चलते ट्रैलर से कूदकर



अपनी जान बचा ली। आग इतनी भीषण थी कि ट्रैलर पूरी तरह जलकर खाक हो गया। आसपास के लोगों ने आग बुझाने का प्रयास किया और तत्काल फायर ब्रिगेड को सूचना दी। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुँची और काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। हालांकि तब तक ट्रैलर पूरी तरह जल चुका था। घटना के कारण राजमार्ग पर कुछ समय के लिये यातायात प्रभावित हुआ। आग लगने के कारणों की जाँच की जा रही है। हालांकि हादसे में कोई जन हानि नहीं हुई, लेकिन ट्रैलर पूरी तरह जलकर खाक हो गया।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विचार मंच (समिति) की बैठक आयोजित, कार्यकारिणी का किया गठन

कोटपूतली(निर्स.) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विचार मंच (समिति) ब्लॉक कोटपूतली की बैठक रविवार को जिलाध्यक्ष पुरण सिंह की अध्यक्षता में ग्राम रामसिंहपुरा स्थित अम्बेडकर छात्रावास में हुई। जिसमें डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विचार मंच (समिति) की ब्लॉक कार्यकारिणी का गठन किया गया। कार्यकारिणी में संरक्षक मंडल में मुख्य संरक्षक आर.एस. झाड़ाेरिया, संरक्षक मीना कुमारी, रतिराम जीलोवा, डॉ. डी.आर. रैवाला व बुधराम एवं अध्यक्ष जगदीश मेघवाल (11 मई के चुनाव अनुसार), वरिष्ठ उपाध्यक्ष बदल्राम, उपाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार, सचिव दुलीचंद आर्य, संगठन सचिव राजेन्द्र तौंदवाल, कोषाध्यक्ष बंशीधर लूनीवाल, सह कोषाध्यक्ष राजेश

बायला, छात्रावास अधीक्षक चिरंजीलाल आर्य, सह अधीक्षक पार्षद उमेश आर्य, सदस्य रामनिवास खारड़िया, संस्कृतिक सचिव सुभाष चन्द आर्य, वरिष्ठ जनसम्पर्क सचिव हरिपाल वर्मा, जनसम्पर्क सचिव मदनलाल वर्मा, परामर्श मंडल में एड. सुबेसिंह मोरोडिया, एड. सीताश हाडिया, भगवान सहाय धानका, श्रीराम बाबूजी, ख्यालीराम बुनकर, नेमोचंद सिरौहवाल, ओमप्रकाश वर्मा को शामिल किया गया है। बैठक में सिद्धार्थ आर्य, रोहितास तरियाला, छोट्टराम सामरिया, डॉ. सुगन चंद, मुकेश कुमार धानका, सुनील कुमार जीलोवा, पूर्व नायब तहसीलदार मदनलाल वर्मा, ओमप्रकाश बुनकर, किशोरी लाल सोंटवाल आदि मौजूद रहे।

जयपुर के आयुष्मान सिंह शेखावत ने देशभर में पहला स्थान हासिल कर नाम किया रोशन

दुबई की गेमा इंटरनेशनल संस्था के स्टूडेंट स्पीकर कॉम्पिटिशन में रहे अक्वल



जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। इंटरनेशनल स्टूडेंट स्पीकर कॉम्पिटिशन में जयपुर के आयुष्मान सिंह शेखावत ने देशभर में पहला स्थान हासिल कर नाम रोशन किया है। दुबई स्थित गेमा इंटरनेशनल संस्था द्वारा आयोजित इंटरनेशनल स्टूडेंट स्पीकर प्रतियोगिता में आयुष्मान सिंह नेशनल टॉपर का खिताब अपने नाम किया है। आयुष्मान सिंह शेखावत जयपुर के सनसिटी स्थित शांति एशियाटिक स्कूल की 12वीं कक्षा के छात्र हैं। भविष्य में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के जरिये सेना में जाकर देश की सेवा करने की चाह रखने वाले आयुष्मान सिंह ने अपनी सफलता का श्रेय अपने दादाजी जय सिंह शेखावत एवं दादीजी पुष्पा शेखावत को दिया है। गौरतलब है कि गेमा इंटरनेशनल संस्था स्कूली विद्यार्थियों को ओजस्वी वक्ता एवं नेतृत्वकर्ता के रूप में तैयार करने के लिए उनकी प्रतिभा को वैश्विक मंच मुहैया करवाती है। प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली इस अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में देशभर के हजारों प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान के लाखों विद्यार्थी भाग लेते हैं।

शहीद मोगा को श्रद्धांजलि का दौर जारी



जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निसं.)। मेहरादासी गांव के शहीद सुरेंद्र मोगा को श्रद्धांजलि देने के लिए रविवार को खेतड़ी विधानसभा प्रत्याशी व झुंझुनू मीणा समाज के अध्यक्ष मनोज घुमरिया मेहरादासी पहुंचे। इस मौके पर सामाजिक कार्यकर्ता अमित मीणा, सुशील मीणा, सुरेंद्र मीणा, लोकेश मीणा, महिलापाल मीणा, बीरबल निर्मल, राजेन्द्र नाथक मौजूद रहे।

सामूहिक विवाह सम्मेलन के आय-व्यय का ब्यौरा पेश



जयपुर टाइम्स

बिजौलिया(निसं.)। ऊपरमाल भील समाज विकास समिति के तत्वावधान में तिलस्वा महादेव में आयोजित हुए 21 वें सामूहिक विवाह सम्मेलन के वेदी विसर्जन व आय-व्यय का ब्यौरा पेश करने के साथ ही समाजसेवियों को सम्मानित किया गया।इस दौरान संरक्षक हीरा लाल मंत्री, अध्यक्ष जगदीश भील, प्रदेश सभापति रामनाथ, सचिव जगदीश प्रसाद, मांगीलाल , भोपतपुरा सरपंच नन्द लाल, भूति लाल ,शंकर लाल ,रमेश भील , भगवती लाल, सूरजमल , भगवान लाल समेत मेवाड़, हाड़ौती, ऊपरमाल, खेराड़ व वरड़ क्षेत्र के कई समाजसेवी मौजूद रहे ।

उच्च रक्तचाप जागरूकता माह पर शपथ ग्रहण समारोह आयोजित



जयपुर टाइम्स

सूरतगढ़(निसं.)। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के एनसीडी क्लिनिकल द्वारा आज रविवार को प्रातः 10.00 बजे विश्व उच्च रक्तचाप जागरूकता माह के तहत शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें चिकित्सा अधिकारी नर्सिंग अधिकारी और अन्य स्टाफ ने यह शपथ ली कि हम आमजन को उच्च रक्तचाप के प्रति जागरूक करेंगे और समय पर उपचार लेने के लिए प्रेरित करेंगे। इस अवसर पर वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ नौरज सुखीजा, अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉक्टर भारत भूषण जांगिड़, चर्म रोग विशेषज्ञ डॉक्टर लोकेश अनुपानी, निश्चेतन विशेषज्ञ डाक्टर संजीवी सोनी, डॉ प्रशांत रसेसेवट, नर्सिंग अधीक्षक सुरेंद्र पारीक, नर्सिंग अधिकारी भेरू सिंह जोषा, आईपीडी इंचार्ज रीना जॉर्ज, लेबर रूम इंचार्ज किरणा, नर्सिंग अधिकारी मंजू, नर्सिंग अधिकारी उषा, एनसीडी काउंसलर दीपक शर्मा, सकद् राम, योगेश कुमारी, सूरज कुमार, उमेश सोलंकी आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय सहकार मसाला मेला-2025 सम्पन्न : 4.10 करोड़ की रिकॉर्ड बिक्री

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जवाहर कला केन्द्र में आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय सहकार मसाला मेला-2025 रविवार को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। मेले में इस बार 4.10 करोड़ रुपये से अधिक की रिकॉर्ड बिक्री हुई, जो पिछले वर्ष की तुलना में करीब एक करोड़ रुपये अधिक है। समापन समारोह में प्रमुख शासन सचिव एवं रजिस्ट्रार, सहकारी समितियां मंजू राजपाल ने श्रेष्ठ स्टॉल्स को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि यह मेला सहकारी समितियों को व्यवसाय में वृद्धि का उपयुक्त मंच प्रदान करता है और यह आयोजन निरंतर बेहतर हो रहा है। उन्होंने सुझाव दिया कि लोगों की रुचि को देखते हुए मेले का आयोजन वर्ष में एक से अधिक बार किया जा सकता है। राज्य सरकार की बजट घोषणा के तहत कॉनफेड द्वारा शीघ्र ही श्री अन्न



आउटलेट खोले जाएंगे। इस दिशा में मसाला मेले में 25 स्टॉल्स पर श्री अन्न उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। राजपाल ने आह्वान

नेक्स्ट फिटनेस स्टूडियो का भव्य शुभारंभ, फिटनेस प्रेमियों में दिखा उत्साह

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुरलीपुरा स्थित लाल डिब्बा चौराहे पर रविवार को नेक्स्ट फिटनेस स्टूडियो का भव्य शुभारंभ किया गया। फिटनेस के प्रति लोगों की बढ़ती रुचि और स्वास्थ्य जागरूकता को ध्यान में रखते हुए इस अत्याधुनिक स्टूडियो की शुरुआत की गई है। उद्घाटन समारोह में प्रदेश जाट महासभा अध्यक्ष राजाराम मील तथा राजस्थान जाट समाज संस्थान अध्यक्ष एवं स्टूडियो के चेयरमैन ताराचंद चौधरी ने संयुक्त रूप से फीता काटकर जिम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर ताराचंद चौधरी ने कहा, 'आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में सेहत सबसे बड़ी पूंजी है। नेक्स्ट फिटनेस स्टूडियो का उद्देश्य युवाओं को फिट बनाना ही नहीं, बल्कि उन्हें एक स्वस्थ जीवनशैली की ओर प्रेरित करना भी है। यहां एक्सरसाइज के साथ-साथ डाइट और डेली रूटीन की भी मार्गदर्शिका की जाएगी, जिससे लोग बेहतर नतीजे प्राप्त कर सकें।' उन्होंने बताया कि यह स्टूडियो सिर्फ युवाओं के लिए नहीं, बल्कि बच्चों और बुजुर्गों को ध्यान में रखकर भी तैयार किया गया है। इसमें अत्याधुनिक फिटनेस उपकरण उपलब्ध हैं और सभी आयु वर्ग के लिए अलग-अलग ट्रेनिंग प्रोग्राम्स संचालित किए जाएंगे। प्रशिक्षित ट्रेनर्स की देखरेख में एक्सरसाइज के साथ ही पोषण और मानसिक स्वास्थ्य पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा। चौधरी ने यह भी जानकारी दी कि शुरुआती सदस्यों के लिए विशेष ऑफर्स रखे गए हैं, ताकि अधिक से अधिक लोग इस पहल से जुड़ सकें। उद्घाटन के पहले दिन ही बड़ी



संख्या में लोगों ने सदस्यता के लिए आवेदन किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शहरवासी फिटनेस के प्रति कितने जागरूक हो रहे हैं। शुभारंभ समारोह में सीताराम अग्रवाल, श्रीचंद चौधरी, सुरेश चौधरी, भागीरथ महला, कुलदीप कुलहरी, जगदीश सोमानी (अध्यक्ष, विश्वकर्मा इंडस्ट्रीज एसोसिएशन), जयपुर टाइम्स के संपादक रामेश्वर लाल जाट,प्रवीण पूनिया, श्रवण कोठारी,अरुण अग्रवाल, विजय सींगड़, संजय सींगड़, मुनेश सींगड़, बीरबल चौधरी, सरदार चौधरी, राजेंद्र चौधरी, सुरेंद्र गजराज, दीपक धानोतिया, पवन अग्रवाल, महेश पारीक, संदीप जाखड़ एडवोकेट सहित अनेक गणमान्यजन एवं उद्यमी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में काफी की संख्या में लोग शामिल हुए, जिनमें से अधिकांश ने स्टूडियो का निरीक्षण कर इसे सराहा और फिटनेस से जुड़ने की इच्छा जताई। नेक्स्ट फिटनेस स्टूडियो के शुभारंभ के साथ ही जयपुरवासियों को एक और विश्वस्तरीय स्वास्थ्य केंद्र की सौगात मिल गई है।

पाली जिले में जल जीवन मिशन के तहत 112 करोड़ के कार्य होंगे, पोमावा में जलाशय निर्माण का शिलान्यास



जयपुर टाइम्स

पाली/जयपुर(निसं.)। जल जीवन मिशन (जेजेएम) के तहत पाली जिले के सुमेरपुर क्षेत्र के पोमावा गांव में उच्च जलाशय निर्माण कार्य का शिलान्यास पशुपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग के केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने पूजा-अर्चना के साथ किया। यह कार्य जवाई बांध आधारित पेयजल परियोजना (कलस्टर-1) की 99 विलेज स्कീम के अंतर्गत होगा। मंत्री कुमावत ने जानकारी दी कि 112 करोड़ रुपये की लागत से सुमेरपुर, सोजत, बाली व मारवाड़ जंक्शन विधानसभा क्षेत्रों के 99 गांवों व 100 ठाणियों में 33 उच्च जलाशय , एक भूमिगत जलाशय तथा दो पंप हाउस का निर्माण किया जाएगा। साथ ही लगभग एक हजार किलोमीटर लंबी पाइपलाइन बिछाई जाएगी। अकेले सुमेरपुर क्षेत्र में 45 गांवों में 20 जलाशयों का निर्माण प्रस्तावित है। पोमावा में 75 हजार लीटर और मोरड़ में 50 हजार लीटर क्षमता के जलाशय बनेंगे। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार हर घर तक शुद्ध पेयजल पहुंचाने के लक्ष्य को लेकर काम कर रही

है। पहले यह परियोजना केवल 5% कार्य के साथ रुकी हुई थी, जिसे अब नई फर्म को सबलेट कर पुनः शुरू किया गया है।

शिलान्यास कार्यक्रम में ग्रामीणों की भागीदारी

पोमावा में आयोजित समारोह में सुमेरपुर उप प्रधान गजेंद्र सिंह राणावत, सरपंच सोहनकंजर राठौड़, पूर्व सरपंच रूपाराम देवासी, उप सरपंच रमेश सिंह राजपुरोहित और समाजसेवी उपस्थित रहे।

धार्मिक और सामाजिक आयोजनों में शामिल हुए मंत्री

मंत्री कुमावत ने गांव नेतार में श्री आशापुरा माताजी मंदिर में आयोजित प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लिया, जहां उनका भव्य स्वागत किया गया। इसके अलावा उन्होंने सिरोही जिले के बड़गांव-शिवगंज स्थित सदगुरु गोशाला में टीन शेड का लोकार्पण भी किया।

आज इन क्षेत्रों में रहेगी बिजली कटौती

चूरू(निसं.)।विद्युत तंत्र के रखरखाव के कारण सोमवार को प्रातः 7.00 बजे से 9.15 बजे तक 11 केवी रेलवे फीडर व 11 केवी आरईसी फीडर की विद्युत आपूर्ति बंद रखी जाएगी जिसके अंतर्गत अग्रसेन नगर, परशुराम नगर, बिसाऊ रोड, भाट कॉलोनी सहित इन फीडर से जुड़े हुए समस्त विद्युत उपभोक्ताओं की विद्युत आपूर्ति बंद रखी जाएगी।

"युवाओं से बदलेगी खेती की तस्वीर" - जयपुर में 'युवा कृषक संवाद' कार्यक्रम का भव्य आयोजन



डॉ. किरोड़ी लाल मीणा बोले - योजनाओं का लाभ हर किसान तक पहुंचे, यही सरकार का संकल्प

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा की अध्यक्षता में रविवार को कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा के महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम में 'युवा कृषक संवाद' कार्यक्रम का आयोजन भव्य रूप से किया गया। इस संवाद कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवा कृषकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य कृषि में नवाचार को प्रोत्साहन देना, युवाओं को खेती की ओर आकर्षित करना और कृषि योजनाओं की जानकारी मुहैया कराना रहा। मंत्री डॉ. मीणा ने कहा कि "प्रदेश की 70% से अधिक आबादी कृषि पर निर्भर है। ऐसे में कृषि केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि यह हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। बदलते समय में खेती के समक्ष नई चुनौतियां खड़ी हो रही हैं। इनसे निपटने के लिए युवाओं की भागीदारी जरूरी है, जो नई तकनीक और ऊर्जा के साथ खेती को उन्नत दिशा दे सकते हैं।" उन्होंने बताया कि 'युवा कृषक संवाद' जैसे आयोजनों

के माध्यम से जैविक खेती, माइक्रो इरीगेशन, फूटों की खेती, स्मार्ट एग्री तकनीक, ड्रोन उपयोग, जल संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, फसल बीमा योजना आदि की जानकारी युवाओं को दी जा रही है। इसके अलावा, बीज मिनीफिट, जिप्सम वितरण, कस्टम हायरिंग सेंटर और प्रगतिशील कृषक भ्रमण की योजनाओं पर भी चर्चा हुई। डॉ. मीणा ने कहा कि सरकार का प्रयास है कि ग्राम सभाओं के माध्यम से कृषि विभाग की सभी योजनाओं की जानकारी किसानों तक पहुंचे और ग्रामीण क्षेत्र का हर कृषक इन योजनाओं का लाभ उठा सके। उन्होंने इस बात पर भी ध्यान जताई कि कृषि में घटती पैदावार के चलते युवाओं का मोहभंग हो रहा है। ऐसे में यह संवाद कार्यक्रम नई सोच और तकनीक के साथ युवाओं को खेती से जोड़ने का जरिया बन सकता है। कार्यक्रम में युवाओं ने भी अपने अनुभव साझा किए और कृषि क्षेत्र में अपने नवाचारों की जानकारी दी। मंत्री ने सभी युवाओं से आह्वान किया कि वे खेती को व्यवसाय के रूप में अपनाएं और आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाकर राज्य की कृषि को आत्मनिर्भर बनाने में योगदान दें। यह संवाद कार्यक्रम युवा ऊर्जा और तकनीकी ज्ञान के समन्वय से कृषि क्षेत्र को सशक्त और समृद्ध बनाने की दिशा में एक प्रेरणादायक पहल साबित हुआ।

भांवता में पक्षियों के लिए बना 672 घरों वाला पक्षी गृह, रक्तदान व नेत्र जांच शिविर का भी आयोजन



स्व. सुवती देवी की पुण्यतिथि पर बुल्डक परिवार ने किया अनुकरणीय कार्य

जयपुर टाइम्स

कुचामन सिटी(निसं.)। ग्राम भांवता में बुल्डक परिवार द्वारा स्वर्गीय श्रीमती सुवती देवी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर एक अनूठी पहल करते हुए बेजुबान पक्षियों के लिए 672 घरों वाला भव्य पक्षी गृह बनवाकर समाज को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। यह पक्षी गृह आंधी, तूफान और वर्षा के दौरान पक्षियों को सुरक्षित आश्रय देगा। पक्षी गृह का उद्घाटन हीरालाल बाजिया, गोपालराम बुल्डक, हुक्मराम बुल्डक, रुक्मा देवी, तीजू देवी और वीर तेजा धाम के पुजारी कुंभाराम बुल्डक सहित बुल्डक परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा किया गया। इस पुण्य अवसर पर विनायक एजुकेशन ग्रुप द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर और निशुल्क नेत्र जांच शिविर

का भी आयोजन किया गया। शिविर में आसपास के ग्रामीणों के साथ ही कुचामन सिटी के शिक्षा संस्थानों के संचालक, विद्यार्थी और जनप्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कुचामन जिला अस्पताल की चिकित्सकीय टीम द्वारा 127 मरीजों की नेत्र जांच की गई और 130 यूनित रक्त एकत्र किया गया। रक्तदान करने वाले युवाओं को विनायक एजुकेशन ग्रुप द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस आयोजन में नावा विधायक एवं राजस्थान सरकार के राजस्व मंत्री विजय सिंह चौधरी, डॉ. गोविंद चौधरी, पूरण रणवा, लाला राम अनंदा, सुल्तान सिंह, मदन कुंड़िया, देवीलाल सहित अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। राजस्व मंत्री ने शिविर का अवलोकन कर इसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की और इसे समाज सेवा की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम बताया। कार्यक्रम में युवाओं और महिलाओं में भारी उत्साह देखा गया। विनायक ग्रुप के निदेशक ने सभी भागंतुकों का स्वागत-स्वाकर कर आभार व्यक्त किया। यह आयोजन पक्षी प्रेम, जनसेवा और पर्यावरण संरक्षण का एक प्रेरक उदाहरण बनकर सामने आया है।

भारत के अभिजन

यूरोप के अभिजनों की मुख्य विशेषता यह रही कि उन्होंने सदा अपने ही प्राचीन ज्ञान की निरंतरता में स्वयं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इसके लिए उन्हें बहुत-से मिथक रचने पड़े और प्रायः अतिरंजनाओं तथा असत्यों तक का सहारा लेना पड़ा। उन्होंने अपने इतिहास के सभी अंधकारमय पक्षों को छुंके दिया। जिस दौर को ठंढकना अर्सभव हो गया, सात-आठ सौ वर्षों के उस पूरे दौर को 'अंधकार युग' कह कर उससे अपना पल्ला झाड़ लिया। लेकिन दूसरी ओर, उसी अवधि के बारे में काल्पनिक गौरव के भाँति-भाँति के किस्से रचते रहे और अपने ज्ञान की जड़ें उसी अवधि में बताते रहे। उन्होंने भारत और चीन से जो कुछ सीखा, उस सब को वे स्वयं यूरोप के ही अतीत में विद्यमान बताने की कोशिश करते रहे। इसके लिए उन्होंने अपनी भाषाओं में विशाल साहित्य रचा, जिसमें गण्यों और अतिरंजनाओं का भी बहुत बड़ा स्थान था। इसके साथ ही विद्वत-विमर्श में उन्होंने ऐसी पदावली अपनाई, जो केवल यूरोप को अपना संदर्भ बनाती है। इस क्रम में उन्होंने विगत डेढ़ सौ-दो सौ वर्षों में रचे गए यूरोपीय साहित्य को विश्व-साहित्य की तरह प्रस्तुत करने का प्रयास किया। यह विश्व में बौद्धिक आधिपत्य स्थापित करने की उनकी सुचिंतित कोशिश है। इसी अर्थ में वे यूरोपीय समाज के अभिजन हैं। भारतीय अभिजनों के नए वर्ग की मुश्किल यहीं से शुरू होती है। वे यूरोपीय अभिजनों की नकल करते हैं। इसके लिए यूरोप में रचित आधुनिक पुस्तकों को ही पढ़ते और पढ़ाते हैं, उन्हीं के आधार पर बहसों और चर्चाएँ करते हैं और उन्हीं को ज्ञान के लिए प्रमाण व अधिकारी मानते हैं। लेकिन केवल यूरोपीय सभ्यता पर गर्व करने पर वे किसी भी प्रकार भारतीय अभिजन नहीं रह पाएँगे, यह तथ्य जानते हुए वे भारतीय सभ्यता के इतिहास को यूरोप की अनुकृति बताने का प्रयास करते हैं। पर इससे कई मुश्किलें पैदा होती हैं। मुख्य मुश्किल तो विचारों के जगत में ही आती है। यूरोप का अभिजन अपने ही शास्त्रों और अपने ही विद्वानों को अपना संदर्भ बनाता है। यह अभिजनों का विश्व-व्यापी लक्षण है। भारत के नए अभिजन इसकी नकल कैसे करें? अगर वे भारतीय शास्त्रों को और भारतीय विद्वानों को मूल संदर्भ बनाते हैं तो वे एक क्षण बौद्धिक स्तर पर खड़े नहीं रह सकते। अगर वे यूरोपीय शास्त्रों और भारत में यूरोपीय शास्त्रों के अनुवादकों को अपना संदर्भ बनाते हैं तो वे स्वतः तःसर के पात्र बन जाते हैं। गहरे में उनके भीतर एक कटुता और हीनता भर जाती है। इसके लिए वे राज्याश्रय का सहारा अवश्य लेते हैं, पर विचारों और विद्या की दुनिया में राज्याश्रय की भूमिका बहुत सीमित होती है। दूसरी समस्या यह है कि वस्तुतः भारत की अपनी विद्या परंपरा कभी भी बहुत क्षीण नहीं हुई और आज भी विशेषतः मानविकी विद्याओं के क्षेत्र में भारत के शास्त्र संपूर्ण यूरोप के शास्त्रों से संख्या में बहुत अधिक हैं और गुणवत्ता में भी कुछ कम नहीं हैं। इस विद्या परंपरा के विशेषज्ञ और अग्रणी लोग भी भारत में बड़ी संख्या में हैं। विशेषतः धर्म, अध्यात्म और संस्कृति के क्षेत्र में भारतीय विद्या परंपरा में दक्ष लोगों की विराट

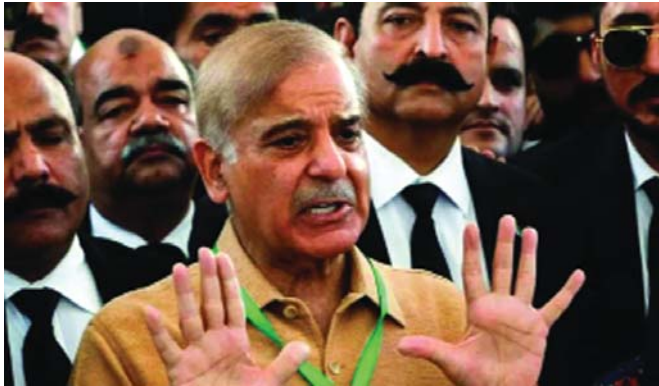


संख्या विद्यमान है। ये ही भारत के वास्तविक अभिजन हैं। इनके सामने भारत के वे नए अभिजन, जो वस्तुतः आधुनिक यूरोप के नियोग से उपजे हैं, काफी बौने और दयनीय नजर आते हैं। वे भारतीयता की बात करने को मजबूर हैं, लेकिन उनकी सारी बातें या तो यूरोपीय लेखकों की लिखी पुस्तकों पर आधारित होती हैं या फिर उन पुस्तकों के अनुवाद के रूप में भारतीय भाषाओं में लिखी पुस्तकों पर आधारित होती हैं। स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति में वे द्वितीय श्रेणी के बौद्धिक नजर आते हैं। एक समस्या और भी है। आधुनिक भारतीय राजनैतिक दलों के नेता भारतीय समाज से ही आते हैं। ऐसी स्थिति में भारतीय समाज की अपने धर्माचार्यों पर और अपनी शास्त्र परंपरा पर जो गहरी श्रद्धा है, उसका उपहास उड़ाने की उनकी हैसियत नहीं बनती। इस प्रकार भारत के हिंदू धर्माचार्य भारत के वास्तविक अभिजन बने रहते हैं और उनकी चमक ज्यों की त्यों बनी रहती है। इसीलिए हम पाते हैं कि प्रशासनिक सेवाओं, सैनिक सेवाओं, पुलिस सेवाओं और न्यायिक सेवाओं के उच्चतम पदों से मुक्त हुए भारतीय भी किसी न किसी भारतीय धर्माचार्य के प्रति गहरी श्रद्धा अवश्य रखते हैं। यह बात जहाँ उनकी भारतीयता का प्रमाण है, वहीं इसी प्रक्रिया में भारत के वास्तविक अभिजनों की महिमा और गौरव बढ़ता ही जाता है। राष्ट्रव्यापी दल होने के कारण कांग्रेस में सभी प्रकार के भारतीय बने रहे और वह कभी भी वैचारिक एकपंथवाद का शिकार पूरी तरह नहीं हो पाई। पर नेहरूजी ने जो प्रक्रिया चलाई थी, उसके कारण एक ओर कम्युनिज्म और दूसरी ओर यूरोपीय किस्म का राष्ट्रवाद, इन दो को केंद्र बना कर दो प्रचंड एकपंथवादी राजनैतिक शक्तियाँ भारत में उभरी हैं। एकपंथवाद इस बात का आग्रह करता है कि वह न केवल शासन में बल्कि धर्म, साहित्य, कलाओं और संस्कृति के सभी क्षेत्रों में अपने ही पंथ का प्रचार करेगा। इसके लिए वह अपनी पार्टी के नेताओं को ही

विचारक और दार्शनिक की तरह प्रस्तुत करता है और मंदिर, विद्याकेंद्र, अध्यात्म केंद्र, कलाकेंद्र आदि सभी को अपने ही पंथ के अनुशासन में लाने का प्रयास करता है। लेकिन हिंदू समाज तो सदा से बहुपंथवादी रहा है। नेहरूपंथियों ने इसमें यह छल किया कि भारत के बहुपंथवाद को वे 'हिंदू, मुसलिम, सिख, ईसाई, आपस में सब भाई-भाई' के नारे के नीचे इस तरह प्रस्तुत करते रहे, मानो हिंदू समाज एक पंथ है और तब, बहुपंथवाद का अर्थ हिंदुओं को एक पंथ की तरह मानते हुए अन्य पंथों को भी समान महत्त्व देना प्रचारित किया गया। पर हिंदू समाज तो स्वयं विविधपंथी है। उसमें सदा से सैकड़ों पंथ हैं। इसलिए यदि कोई राजनैतिक दल एक अलग पंथ बनने का प्रयास करेगा, तो वह उन सैकड़ों पंथों में से ही एक और पंथ बन कर रह जाएगा और इस प्रकार वह गहरे अर्थों में भारत में प्रजातांत्रिक शासन करने के अयोग्य हो जाएगा। एकपंथवादी दलों में यह सामान्य रुझान होता है कि वे मंदिरों व धर्मकेंद्रों को अपने अंकुश में रखें। बातें तो भ्रष्टाचार पर नियंत्रण की होती हैं, लेकिन वस्तुतः आध्यात्मिक दृष्टि से यह सबसे बड़ा भ्रष्टाचार है कि किसी धर्म-परंपरा में विशेष दक्षता जिन व्यक्तियों को प्राप्त नहीं है, वे उस धर्म-परंपरा के किसी केंद्र को संचालित करने का प्रयास करें या उस पर नियंत्रण रखने की कोशिश करें। भारत में एक भी ऐसा बड़ा नेता 1947 के बाद से आज तक नहीं हुआ है जो वेदों का शीर्ष विद्वान हो, उपनिषदों और पुराणों का गंभीर अध्युता हो और भारतीय ज्ञान परंपरा और शास्त्र परंपरा में निष्णात हो। ऐसी स्थिति में उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए विचार वस्तुतः भारतीय संस्कारों और यूरोप की कुछ द्वितीय श्रेणी की पुस्तकों के अधिकचरे सन्निमश्रण की दयनीय प्रस्तुति मात्र होते हैं, जिनमें संश्लेषण बल से अत्यधिक प्रशंसा और प्रचार के द्वारा गौरव प्रदान किया जाता है। पर तत्त्वतः वे काफी कमजोर विचार होते हैं।

सम्पादकीय

पाकिस्तान के परमाणु हथियार से वैश्विक खतरा और भारत की बदली रणनीति



पहलगाम हमले की प्रतिक्रिया में पाकिस्तान के साथ हुए सैन्य संघर्ष के बाद भारत ने अपनी रणनीति में तेजी से बदलाव किया है। आतंकवाद के खिलाफ सतत संघर्ष के लिए सुरक्षाबल तैनात हैं। शीर्ष नेतृत्व लगातार उन जगहों पर जाकर सेना का मनोबल बढ़ा और पाकिस्तान के झूठे दावों का पर्दाफाश कर रहा है, जिन पर पाकिस्तान ने हमले की बात कही थी। इसी क्रम में रक्षामंत्री श्रीनगर में सेना के जवानों से मिलने गए। वहां उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान आकर्षित किया कि पाकिस्तान एक दुष्ट और गैरजिम्मेदार देश है, उसके पास परमाणु हथियार होना खतरे से खाली नहीं हो सकता। वह बार-बार भारत को परमाणु हमले की धमकी देता रहा है। इसके पहले प्रधानमंत्री ने भी कहा था कि भारत कभी पाकिस्तान की परमाणु धमकी के आगे झुकने वाला नहीं है। रक्षामंत्री ने कहा कि पाकिस्तान के परमाणु आयुध पर अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की निगरानी होनी चाहिए। भारत इसकी मांग अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाएगा। भारत ने पाकिस्तान के साथ सभी तरह के व्यापारिक संबंध तोड़, सिंधु जल समझौते को निलंबित और उसके आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर उसे काफी कमजोर कर दिया है। अब उसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी घेरने की तैयारी शुरू कर दी है। अगर उसके परमाणु हथियारों पर अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की निगरानी पर सहमति बनती है, तो पाकिस्तान पर दबाव और बढ़ जाएगा। पाकिस्तान के परमाणु आयुध को लेकर लंबे समय से चिंता जताई जाती रही है। इसलिए कि वहां आतंकवादी संगठनों को प्रश्रय मिलता है। वहां के खूंखार दहशतगर्द सेना और खुफिया एजेंसी के संरक्षण में रहते रहे हैं। ऐसे में यह खतरा लगातार बना रहता है कि उसके परमाणु हथियार अगर आतंकियों के हाथ लग गए, तो वे विनाश का कारण बन सकते हैं। भारत के साथ पाकिस्तान के तल्लख रिश्ते किसी से छिपे नहीं हैं, पर दूसरे देशों में भी उसके आतंकियों की गतिविधियाँ उजागर हैं। इसलिए यह न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय होना चाहिए। भारत ने न सिर्फ उसके नौ आतंकी ठिकानों को निशाना बना कर उन्हें ध्वस्त कर दिया, बल्कि इसके सबूत भी पूरी दुनिया के सामने पेश कर दिए कि वहां का राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व विश्व आतंकवादी की सूची में शामिल संगठनों और आतंकियों के साथ खड़ा है। इतना कुछ हो जाने के बाद भी पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा। कश्मीर के त्राल और केल्लर में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में छह आतंकियों का मारा जाना इस बात का सबूत है कि अब भी वह घाटी में दहशतगर्दों को बढ़ावा दे रहा है। आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में भारत ने अपनी रणनीति बदल कर जमीनी स्तर और विश्व मंच, दोनों जगह पाकिस्तान को घेरने की तैयारी कर ली है। घाटी से दहशतगर्दों के सफाए का निरंतर अभियान उसी का नतीजा है। मगर विचित्र है कि पाकिस्तान के खिलाफ इतने सबूत होने और उसके लगातार आतंकवाद को पोसने के प्रमाण मिलते रहने के बावजूद चीन और तुर्किए जैसे कुछ देश उसका खुला समर्थन कर रहे हैं। इन दोनों देशों के पाकिस्तान से अपने स्वार्थ जुड़े हैं, पर दूसरे देशों से उसकी हकीकत छिपी नहीं है। अगर भारत गंभीरता से उसके परमाणु हथियारों का मुद्दा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाता और कूटनीतिक प्रयासों से इस पर वैश्विक सहमति बनाने में कामयाब हो पाता है, तो निस्संदेह इसकी बड़ी कामयाबी होगी।

उन्मुक्त बचपन



बचपन हर चिंता और फिक्र से मुक्त होता है। बच्चों के बीच जाति धर्म और नस्ल की कोई दीवार नहीं होती है। बच्चे उन्मुक्त होकर खेलते रहना चाहते हैं, लेकिन आज बच्चों के खेलने का मैदान विलुप्त होता जा रहा है। आजकल हर जगह निजी स्कूल भरे हुए हैं, लेकिन शायद ही किसी विद्यालय के पास खेल का मैदान है। खेलने की जगह पर आज बड़ी-बड़ी इमारतें बन गई हैं। बच्चों का परंपरागत खेल क्रिकेट, फुटबाल, लुका-छिपी, कबड्डी, पतंगबाजी आदि बंद हो गए हैं। आजकल माता-पिता भी यहीं चाहते हैं कि बच्चे अधिकांश समय शांतिपूर्वक घर में रहें। बच्चों का बचपन आज घर के अंदर के खेल,

टीवी और मोबाइल में सिमटता जा रहा है। इससे बच्चों का शारीरिक विकास अवरुद्ध हो रहा है। बच्चों में अकेले रहने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। वीडियो गेम और टीवी की लत से बच्चों में नकारात्मक भावना बढ़ती है। हिंसात्मक टीवी गेम देखने से छोटे-छोटे बच्चे भी आज स्कूल में अपराध कर बैठते हैं। बच्चों का बचपन मोबाइल और टीवी में सिमट कर रह गया है। हमें बच्चों का बचपन बचाना होगा। बच्चों के लिए समाज और सरकार को खेल का मैदान उपलब्ध कराना चाहिए। बच्चे ही देश का भविष्य है। भविष्य की रक्षा करना उन्हें संवारना हर नागरिक का धर्म है। योजनाओं के लिए सरकारों की ओर से

धन का रोना अक्सर सामने आता रहता है। न केवल प्रमुख योजनाओं के लिए धन की कमी है, बल्कि जो उपलब्ध है उसे भी प्रभावी ढंग से खर्च नहीं किया जा रहा है। वैश्विक भूखमरी सूचकांक, 2022 के अनुसार, भारत 121 देशों में 107 वें स्थान पर है। भारत सरकार ने रिपोर्ट के निष्कर्ष को नकारने के अपने प्रयास में तुरंत सूचकांक को नकारने का प्रयास किया। जबकि वैश्विक भूखमरी सूचकांक विशेष रूप से बच्चों के बीच पोषण का एक महत्वपूर्ण संकेतक है, क्योंकि यह बच्चों में कैलोरी की कमी को दिखाता है। इसलिए किसी समस्या से भागने से उसका हल नहीं निकलेगा।

झूठ का परदा

ऐसे लोग हर पल अपनी बात बदलते रहते हैं और उनके झूठ से सबसे ज्यादा परिवार के सदस्य और उनके सगे-संबंधी ही परेशान होते हैं। वे ज्यादा परेशान इसलिए होते हैं कि झूठ बोलने वाला व्यक्ति आमतौर पर खुद को दूसरों से बेहतर साबित करने की कोशिश करता रहता है। वह अपने झूठ को छिपाने के लिए हर हाल में अपने आप को सही साबित करने का प्रयास करता है। अगर हम ऐसे व्यक्ति को सही-गलत सिखाना या बताना चाहते हैं तो वह उलट कर हमें ही दोषी करार देने लगता है। उसे न प्यार की भाषा समझ में आती है, न डांट की।

आज जीवन-शैली कुछ ऐसी हो गई है कि अधिकतर लोगों को झूठ बोलने में कोई हिचक नहीं होती। बहुत से लोगों का तर्क तो यह भी होता है कि किसी के भले के लिए अगर झूठ बोला जाए तो वह झूठ नहीं होता। यह तर्क और इसका खेल यहाँ पर भी नहीं रुकता। धोखा तो किसी को भी देना बुरी बात है, किसी के भरोसे को तोड़ना है और कानूनी संदर्भ आने पर दंडनीय अपराध है। लेकिन खुद को धोखा देना तो आत्मघात के समान है। अपने जीवन और भविष्य के साथ खतरनाक खिलवाड़ है। जब कोई बढ़-चढ़ कर अपनी बड़ाई करता है या झूठ बोलता है, तो कई बार वह एक तरह से खुद को धोखा दे रहा होता है। अक्सर ऐसी स्थितियों का सामना होता है, जब लगता है कि बच्चा हो या बड़ा, ज्यादातर लोगों की रंग-रंग में झूठ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बस गया है। झूठ बोलने में उन्हें आनंद की अनुभूति होती है। कुछ लोग तो अपनी स्वायत्त सिद्धि के लिए किसी भी हद तक चले जाते हैं। बिना किसी फायदे या नुकसान के, बिना किसी का भला या बुरा सोचे, बेबाक झूठ बोल दिया जाता है। जो बात झूठ से शुरू हो तो क्या वह सच पर खल्ल होगी? मेरा मानना है कि ऐसा नहीं होगा! झूठ पर झूठ का एक सिलसिला चालू हो जाता है। ऐसे लोग हर पल अपनी बात बदलते रहते हैं और उनके झूठ से सबसे ज्यादा परिवार के सदस्य और उनके सगे-संबंधी ही परेशान होते हैं। वे ज्यादा परेशान इसलिए होते हैं कि झूठ बोलने वाला व्यक्ति आमतौर पर खुद को दूसरों से बेहतर साबित करने की कोशिश करता रहता है। वह अपने झूठ को छिपाने के लिए हर हाल में अपने आप को सही साबित करने का प्रयास करता है। अगर हम ऐसे व्यक्ति को सही-गलत सिखाना या बताना चाहते हैं तो वह उलट कर हमें ही दोषी करार देने लगता है। उसे न प्यार की भाषा समझ में आती है, न डांट की। मनोविश्लेषकों का कहना कि इस तरह के लोग दूसरों को प्रभावित करने के आशय से



अपने और अपने काम, अपनी उपलब्धियों के बारे में इस प्रकार झूठी बातें बढ़ा-चढ़ा कर बताते हैं कि बाद में वे खुद ही उन बातों पर विश्वास करने लगते हैं। उनका मन-मस्तिष्क उनकी ऐसी गुण को भी सही मान जाता है। परिणाम यह होता है कि इसी भ्रमाले में वे अपने कार्य निष्पादन, कर्तव्य, दायित्व के प्रति लापरवाह और आखिरकार उदासीन हो जाते हैं और इस तरह परेशानी में पड़ जाते हैं। एक कहावत है कि 'एक झूठ को छिपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं।' अपनी अस्तित्वहीन उपलब्धियों, सफलताओं का हिंदोरा पीटने वाले ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि भेद एक दिन तो खुलना ही है। वास्तविकता सामने आने पर बेवजह शर्मिंदा होने के कारण ऐसे लोग तरह-तरह के बहाने बनाने लगते हैं, दलीलें पेश करते हैं। फिर दूसरों के मत्थे दोष मढ़ने का भी प्रयास करते हैं और इस प्रकार पतन के फिसलन भरे रास्ते पर तेजी से चल पड़ते हैं। इसलिए अपने प्रति ईमानदार होना अनिवार्य है। अपनी क्रमियों, कमजोरियों, त्रुटियों को जानना, पहचानना, मानना नितांत जरूरी है। तभी उन्हें सुधारने का प्रयास हो पाएगा। इलाज से पहले रोग का

निदान आवश्यक होता है। अपनी कमियों को खुद से छिपा कर, उन पर परदा डाल कर, उन्हें नकार कर हम केवल उस कबूतर की तरह व्यवहार कर रहे होते हैं जो बिल्ली को देख कर करता है। जब बिल्ली उसके नजदीक आती है, तब वह यह मान कर आँखें मूंद देता है कि बिल्ली भी उसे नहीं देख रही है। इसी भ्रमाले में वह आखिर जान से हाथ धो बैठता है। कभी और कमजोरी किसमें नहीं होती। कमियाँ और कमजोरी होना बुरा नहीं है। बुरा है उसे स्वीकार करके सुधारने की बजाय उस पर परदा डालना। दूसरों द्वारा दिए गए धोखे से तो ईसान निपट भी लेता है, पर अपने आपसे धोखा करके भला कहां रह सकता है? इसी व्याधि का एक अन्य रूप यह भी है कि झूठ बोलने वाले व्यक्ति का मान-सम्मान धीरे-धीरे नष्ट होने लगता है। झूठ का एक पहलू यह भी है कि जब हम किसी व्यक्ति से झूठ बोलते हैं और जब तक हमें इस बात का एहसास होता है, तो उस एहसास के होने से पहले ही दूसरा व्यक्ति हम पर भरोसा करना छोड़ चुका होता है। हम आत्मसमर्पण भी कर लें तो वह भरोसा पूरी तरह वापस नहीं आता।



इसलिए फिल्म निर्माता बनना चाहते थे अनुराग कश्यप, सिनेमा को लेकर की अपने मन की बात

अनुराग कश्यप ने सिनेमा के प्रति को दिखाया है। निर्माता अनुराग कश्यप ने कहा कि जब चीजें खराब हो जाती हैं, तो वे खुद को याद दिलाते हैं कि वे कहाँ से आए हैं। अनुराग ने यह भी कहा कि उनके पास आज इंडस्ट्री में काम कर रहे, कई स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं की तुलना में अधिक विशेषाधिकार है और यही वह चीज है जिस पर वे अपने रास्ते में आने वाली सभी बाधाओं के बजाय ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं।

इसलिए फिल्म निर्माता बनना चाहते थे अनुराग

फोर्ब्स को दिए एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि इन दिनों दर्शक बड़े बजट की फिल्मों को देखना पसंद करते हैं, इस बीच वे स्ट्रीमिंग पर आने वाली छोटी फिल्मों का इंतजार करते हैं। उन्होंने कहा कि मैंने भविष्य की ओर देखना बंद कर दिया है। अब मैं उन चीजों पर बात करना चाहता हूँ, जिस पर बात करना लोगों ने बंद कर दिया है। मैं एक फिल्म निर्माता बनना चाहता था क्योंकि मुझे बड़े पर्दे पर फिल्में देखना पसंद है।

सिनेमा से है बेहद प्यार

अनुराग कश्यप ने कहा कि मैं घर पर जो रुकावटें आती हैं, उसके कारण घर पर फिल्में देखना पसंद नहीं करता हूँ। उन्होंने कहा, मुझे सिनेमा में ही फिल्में देखने में मजा आता है। अनुराग कश्यप ने कहा, वया होगा अगर सब कुछ खराब हो जाए। अगर मेरा सारा काम गलत हो जाए। मैं जहाँ से आया हूँ, वहीं चला जाऊंगा। मैं सिनेमा से बहुत प्यार करता हूँ।

निर्माताओं के साथ होती है तुलना

अन्य निर्माताओं के साथ तुलना किए जाने पर अनुराग बसु ने कहा कि मेरी अन्य निर्देशकों के साथ तुलना क्यों की जाती है। मुझे एक स्वतंत्र फिल्म निर्माता क्यों नहीं माना जाता। बता दें कि निर्माता अनुराग कश्यप की कन्नड़ फिल्म टाइगर्स पॉन्ड बॉर्नल फिल्म फेस्टिवल में दिखाई गई।



मोहनलाल ने कंफर्म की दृश्यम 3

मलयालम सुपरस्टार मोहनलाल जल्द ही दृश्यम फ्रेवॉज की अगले भाग में नजर आने वाले हैं। इस बात की जानकारी उन्होंने खुद ही सोशल मीडिया के जरिए दी है। मोहनलाल ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट से लिखा, अतीत कभी शांत नहीं रहता। दृश्यम 3 कंफर्म। इस एलान के बाद फैंस को उत्साह काफ़ी ज्यादा बढ़ गया है। लोग सोशल मीडिया पर कमेंट के जरिए अपनी भावनाएं व्यक्त कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, बलासिक क्रिमिनल वापस आ रहा है। एक और यूजर ने लिखा, इस फिल्म के लिए अब और इंतजार नहीं कर सकती। इसके अलावा और भी यूजर्स कमेंट के जरिए अपनी भावनाएं व्यक्त कर रहे हैं।

आयुष्मान के साथ पर्दे पर जमेगी शरवरी वाघ की जोड़ी

बॉलीवुड के दिग्गज निर्देशक सूरज बड़जात्या को पारिवारिक और रोमांटिक कहानियों को बड़े पर्दे पर पेश करने के लिए जाना जाता है। हाल ही में उनकी अगली फिल्म को लेकर एक नई जानकारी सामने आई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक शरवरी वाघ को आयुष्मान खुराना के साथ सूरज बड़जात्या की अगली फिल्म के लिए कास्ट किया गया है।



इस वजह से किया गया कास्ट

निर्देशक को हम साथ-साथ हैं, मैंने प्यार किया और हम आपके हैं कौन जैसी पारिवारिक फिल्मों के लिए जाना जाता है। रिपोर्ट के अनुसार शरवरी ने इस भूमिका के लिए सूरज बड़जात्या की तरफ से तय किए गए सभी मानदंडों को पूरा किया है। खासकर फिल्म में मासूमियत और संवेदनशीलता को शानदार तरीके से व्यक्त करने की उनकी क्षमता ने उन्हें इस भूमिका के लिए आदर्श उम्मीदवार बनाया।

पहली बार जमेगी जोड़ी

दिसंबर 2024 में यह जानकारी सामने आई थी कि आयुष्मान खुराना सूरज बड़जात्या की फिल्म में प्रेम के किरदार में नजर आएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार सूरज बड़जात्या को अपने आगामी पारिवारिक ड्रामा फिल्म के लिए एक नए चेहरे की तलाश थी। इस बार उन्होंने आयुष्मान खुराना को चुना है, जिनकी छवि परिवारों के बीच खासी लोकप्रिय है। यह आयुष्मान खुराना और शरवरी की एक साथ पहली फिल्म होगी।

इस वजह से सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि दोनों ने वास्तव में शादी कर ली है और अब वे हनीमून मना रहे हैं।

उदय चोपड़ा को कर चुकी हैं डेट

उदय चोपड़ा ने साल 2013 में नरगिस फाखरी को डेट करना शुरू किया था। एक-दूसरे को पांच साल तक डेट करने के बाद, दोनों ने 2017 में ब्रेकअप कर लिया था। हालांकि, एक इंटरव्यू में उदय के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करते हुए नरगिस ने कहा था, उदय और मैंने 5 साल तक डेट किया और वह भारत में मुझे मिले सबसे खूबसूरत इंसान थे। मैंने मीडिया के सामने यह कभी नहीं कहा क्योंकि लोगों ने मुझे अपने रिश्ते को छिपाकर रखने के लिए कहा था, लेकिन मुझे इसका अफसोस है।

नरगिस फाखरी ने लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड से की गुपचुप शादी!

एक्ट्रेस नरगिस फाखरी ने अपने लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड टोनी बेग से शादी कर ली है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दोनों ने हाल ही में लॉस एंजिल्स में गुपचुप तरीके से शादी की। इसमें सिर्फ परिवार और करीबी दोस्त ही शामिल हुए थे। अब यह कपल स्विटजरलैंड में अपना हनीमून मना रहा है। हालांकि, नरगिस ने अभी तक इस मामले में कोई रिएक्शन नहीं दिया है। रेंडिट पर नरगिस फाखरी और टोनी बेग की कुछ तस्वीरें शेयर की गई हैं। इसमें उनका वैडिंग केक दिखाई दे रहा है, जिस पर हैप्पी मैरिज लिखा हुआ है। साथ ही दोनों के साइन भी किए गए हैं।

टोनी बेग कश्मीर के रहने वाले एक बिजनेसमैन हैं। दोनों की पहली मुलाकात एक पार्टी के दौरान हुई थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, नरगिस और टोनी 2022 से एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। नरगिस ने शेयर की स्विटजरलैंड की फोटोज नरगिस ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर स्विटजरलैंड की कई तस्वीरें शेयर की हैं। इसके अलावा, एक्ट्रेस टोनी की स्टोरी भी री-शेयर कर रही है।

आयुष्मान के साथ पर्दे पर जमेगी शरवरी वाघ की जोड़ी

बॉलीवुड के दिग्गज निर्देशक सूरज बड़जात्या को पारिवारिक और रोमांटिक कहानियों को बड़े पर्दे पर पेश करने के लिए जाना जाता है। हाल ही में उनकी अगली फिल्म को लेकर एक नई जानकारी सामने आई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक शरवरी वाघ को आयुष्मान खुराना के साथ सूरज बड़जात्या की अगली फिल्म के लिए कास्ट किया गया है।

इस वजह से किया गया कास्ट

निर्देशक को हम साथ-साथ हैं, मैंने प्यार किया और हम आपके हैं कौन जैसी पारिवारिक फिल्मों के लिए जाना जाता है। रिपोर्ट के अनुसार शरवरी ने इस भूमिका के लिए सूरज बड़जात्या की तरफ से तय किए गए सभी मानदंडों को पूरा किया है। खासकर फिल्म में मासूमियत और संवेदनशीलता को शानदार तरीके से व्यक्त करने की उनकी क्षमता ने उन्हें इस भूमिका के लिए आदर्श उम्मीदवार बनाया।

पहली बार जमेगी जोड़ी

दिसंबर 2024 में यह जानकारी सामने आई थी कि आयुष्मान खुराना सूरज बड़जात्या की फिल्म में प्रेम के किरदार में नजर आएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार सूरज बड़जात्या को अपने आगामी पारिवारिक ड्रामा फिल्म के लिए एक नए चेहरे की तलाश थी। इस बार उन्होंने आयुष्मान खुराना को चुना है, जिनकी छवि परिवारों के बीच खासी लोकप्रिय है। यह आयुष्मान खुराना और शरवरी की एक साथ पहली फिल्म होगी।

इस वजह से सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि दोनों ने वास्तव में शादी कर ली है और अब वे हनीमून मना रहे हैं।

उदय चोपड़ा को कर चुकी हैं डेट

उदय चोपड़ा ने साल 2013 में नरगिस फाखरी को डेट करना शुरू किया था। एक-दूसरे को पांच साल तक डेट करने के बाद, दोनों ने 2017 में ब्रेकअप कर लिया था। हालांकि, एक इंटरव्यू में उदय के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करते हुए नरगिस ने कहा था, उदय और मैंने 5 साल तक डेट किया और वह भारत में मुझे मिले सबसे खूबसूरत इंसान थे। मैंने मीडिया के सामने यह कभी नहीं कहा क्योंकि लोगों ने मुझे अपने रिश्ते को छिपाकर रखने के लिए कहा था, लेकिन मुझे इसका अफसोस है।

इन फिल्मों में काम कर चुकीं नरगिस

मॉडलिंग की दुनिया में अपनी जगह बनाने के बाद नरगिस ने 2011 में फिल्म रॉकस्टार से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। इस फिल्म के बाद नरगिस फिल्म मद्रास कैफे, मैं तेरा हीरो, अजहर, हाउसफुल 3 और अमावस जैसी फिल्मों में नजर आईं।

इस वजह से सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि दोनों ने वास्तव में शादी कर ली है और अब वे हनीमून मना रहे हैं।

उदय चोपड़ा को कर चुकी हैं डेट

उदय चोपड़ा ने साल 2013 में नरगिस फाखरी को डेट करना शुरू किया था। एक-दूसरे को पांच साल तक डेट करने के बाद, दोनों ने 2017 में ब्रेकअप कर लिया था। हालांकि, एक इंटरव्यू में उदय के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करते हुए नरगिस ने कहा था, उदय और मैंने 5 साल तक डेट किया और वह भारत में मुझे मिले सबसे खूबसूरत इंसान थे। मैंने मीडिया के सामने यह कभी नहीं कहा क्योंकि लोगों ने मुझे अपने रिश्ते को छिपाकर रखने के लिए कहा था, लेकिन मुझे इसका अफसोस है।

तीन मिनट के रोल के लिए वसूले करोड़ों?

फिल्म डाकू महाराज में उर्वशी का रोल बहुत बड़ा नहीं है। मगर, शुरुआत से उन्होंने इस तरह का माहौल बनाकर रखा कि जैसे वे फिल्म की लीड अदाकारा हैं। इसे लेकर उन्हें काफी ट्रोलिंग भी झेलनी पड़ी है। अब एक बार फिर उर्वशी इस फिल्म में अपनी फीस को लेकर चर्चा में आ गई हैं। फिल्म में उर्वशी का रोल महज तीन मिनट का रहा है। मगर, मीडिया रिपोर्ट्स में दावे किए जा रहे हैं कि इसके लिए उन्हें अच्छा-खासा भुगतान किया गया है।

तीन मिनट का रोल और फीस इतने करोड़

फिल्म डाकू महाराज में उर्वशी रौतेला की फीस को लेकर अटकलें लगी हैं। कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावे किए जा रहे हैं कि अभिनेत्री को अपने करीब तीन मिनट के रोल के लिए तीन करोड़ रुपये फीस दी गई है। यानी एक मिनट के लिए एक करोड़ रुपये। हालांकि, खबरों में किए जा रहे दावों की अभी उर्वशी या किसी की तरफ से आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

इस गाने से बटोरी चर्चा

उर्वशी ने फिल्म डाकू महाराज के दाबिड़ी-दीबिड़ी गाने से काफी लोकप्रियता हासिल की है। इसमें वे नंदमुरी बालकृष्ण के साथ नजर आईं। गाने में उर्वशी के डांस मूव्स पर भी काफी विवाद हुआ। 12 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज हुई डाकू महाराज आज 21 फरवरी से नेटपिलक्स पर स्ट्रीम हो रही है।

राजकुमार राव निभाएंगे सौरव गांगुली का रोल

राजकुमार राव जल्द ही अपकमिंग बायोपिक फिल्म में पूर्व भारतीय क्रिकेट कैप्टन सौरव गांगुली की भूमिका में नजर आएंगे। काफी समय से हीरो को लेकर चर्चा हो रही थी कि ऑन-स्क्रीन सौरव की भूमिका में कौन नजर आएगा। अब खुद क्रिकेटर ने अनाउंस किया है कि बड़े पर्दे पर उनकी भूमिका राजकुमार राव अदा करेंगे। पश्चिम बंगाल के बर्धमान में गुरुवार को मीडिया से बात करते हुए सौरव गांगुली ने कहा, 'जो मैंने सुना है, उसके अनुसार राजकुमार राव लीड रोल निभाएंगे, लेकिन डेट को लेकर इश्यू है। इसलिए इस बायोपिक फिल्म के सिनेमाघरों में रिलीज होने में एक साल से ज्यादा का समय लग जाएगा।' यह बायोपिक फिल्म फिलहाल शूटिंग के स्टार्टिंग फेज में है। लेकिन इसकी अनाउंसमेंट के बाद से एक्टर के फैंस काफी एक्साइटेड हैं। हालांकि मेकर्स ने फिल्म को लेकर ज्यादा जानकारी नहीं दी है। फिल्म के नाम और अन्य कलाकारों का नाम भी अभी नहीं बताया गया है।

राजकुमार राव निभाएंगे सौरव गांगुली का रोल

इस वजह से सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि दोनों ने वास्तव में शादी कर ली है और अब वे हनीमून मना रहे हैं।

उदय चोपड़ा को कर चुकी हैं डेट

उदय चोपड़ा ने साल 2013 में नरगिस फाखरी को डेट करना शुरू किया था। एक-दूसरे को पांच साल तक डेट करने के बाद, दोनों ने 2017 में ब्रेकअप कर लिया था। हालांकि, एक इंटरव्यू में उदय के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करते हुए नरगिस ने कहा था, उदय और मैंने 5 साल तक डेट किया और वह भारत में मुझे मिले सबसे खूबसूरत इंसान थे। मैंने मीडिया के सामने यह कभी नहीं कहा क्योंकि लोगों ने मुझे अपने रिश्ते को छिपाकर रखने के लिए कहा था, लेकिन मुझे इसका अफसोस है।

मुश्किल वक्त मूव ऑन करने में यकीन करता हूँ

बीते लंबे समय से अपनी निजी जिंदगी के कारण चर्चा में रहने वाले अर्जुन कपूर इन दिनों खबरों में हैं अपनी नई फिल्म मेरे हसबैंड की बीवी को लेकर। अपनी पिछली फिल्म सिंघम अगेन में वे एक नेगेटिव किरदार में दिखे थे, मगर अब वे थिएटर में रोम-कॉम रूप में नजर आएंगे। इस मुलाकात में वे शादी, अपनी जिंदगी के उतार-चढ़ाव, सफर और अतीत को याद करते हैं। बीते लंबे समय से फिल्में थिएटर में जो जलवा नहीं दिखा पा रही हैं। मगर अर्जुन इस मामले में प्रेशर फील नहीं करते। वे कहते हैं, प्रेशर लेने से क्या होगा? हम अदाकार हैं। हमारा काम अभिनय करना है। आज का दर्शक बहुत समझदार हो गया है। इस सवाई को स्वीकारना होगा कि फिल्म अच्छी होगी तो चलेगी।

मेरे वैल्यूज आज भी जस के तस हैं

आज से त करीबन 13 साल पहले अर्जुन कपूर ने इश्कजादे से फिल्मों में एंट्री की थी। तब से लेकर अब तक के अपने सफर के बारे में वे कहते हैं, इश्कजादे में आपने जिस मासूम और वल्लरेबल लड़के को देखा था, वही वल्लरेबिलिटी आज भी है। दौर बदल गया है, चीजें बदल गई हैं, मगर मेरे कोर वैल्यूज के तस हैं। मेरे माता-पिता और परिवार ने जो कुछ सिखाया है। मैं आज भी वही हूँ। दस-बारह सालों में मेरी जिंदगी में कई उतार-चढ़ाव आए, मगर मैं अटल रहा हूँ। मैंने अपने काम से जवाब दिया, उन लोगों को जिन लोगों ने मुझ पर सवाल उठाए। मैं लगातार अपना काम करता गया। इश्कजादे, टू स्टेट, की एंड का, सदीप और पिंकी फरार, मुबारका जैसी फिल्मों से मैं ऑडियंस का प्यार पाता गया। मगर सिंघम अगेन में मुझे दर्शकों और क्लिटिक्स का प्यार मिला है, तो वो मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। अब मुझे अपनी इस नई फिल्म से बहुत उम्मीद है। मैं कह सकता हूँ कि मेरा सफर शानदार रहा और आज मैं जो कुछ हूँ, इसमें मेरी यात्रा का बहुत बाद योगदान रहा है।

मुश्किल वक्त मूव ऑन करने में यकीन करता हूँ

इस वजह से सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि दोनों ने वास्तव में शादी कर ली है और अब वे हनीमून मना रहे हैं।

उदय चोपड़ा को कर चुकी हैं डेट

उदय चोपड़ा ने साल 2013 में नरगिस फाखरी को डेट करना शुरू किया था। एक-दूसरे को पांच साल तक डेट करने के बाद, दोनों ने 2017 में ब्रेकअप कर लिया था। हालांकि, एक इंटरव्यू में उदय के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करते हुए नरगिस ने कहा था, उदय और मैंने 5 साल तक डेट किया और वह भारत में मुझे मिले सबसे खूबसूरत इंसान थे। मैंने मीडिया के सामने यह कभी नहीं कहा क्योंकि लोगों ने मुझे अपने रिश्ते को छिपाकर रखने के लिए कहा था, लेकिन मुझे इसका अफसोस है।

जिस फिल्म में अस्मिस्ट था, आज उसी के पार्ट 2 हीरो हूँ

फिल्म परिवार के होने के साथ-साथ वे 16 साल की उम्र में सहायक निर्देशक भी रहे। वे कहते हैं, देखिए मैं सिनेमा के बैकग्राउंड से हूँ। घर पर खाना परोसा जाता तो सिनेमा के साथ साथ ही बात शुरू होती है और सिनेमा के साथ ही बात खत्म होती है। मगर यदि आपको सिनेमा के क्षेत्र में कुछ करना है, तो कुरुक्षेत्र में तो उतरना ही पड़ेगा। मैं उतर पड़ा सहायक निर्देशक

मुश्किल वक्त मूव ऑन करने में यकीन करता हूँ

इस वजह से सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि दोनों ने वास्तव में शादी कर ली है और अब वे हनीमून मना रहे हैं।

उदय चोपड़ा को कर चुकी हैं डेट

उदय चोपड़ा ने साल 2013 में नरगिस फाखरी को डेट करना शुरू किया था। एक-दूसरे को पांच साल तक डेट करने के बाद, दोनों ने 2017 में ब्रेकअप कर लिया था। हालांकि, एक इंटरव्यू में उदय के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करते हुए नरगिस ने कहा था, उदय और मैंने 5 साल तक डेट किया और वह भारत में मुझे मिले सबसे खूबसूरत इंसान थे। मैंने मीडिया के सामने यह कभी नहीं कहा क्योंकि लोगों ने मुझे अपने रिश्ते को छिपाकर रखने के लिए कहा था, लेकिन मुझे इसका अफसोस है।

शेरा आज भी हमारे समाज में अहम है

अर्जुन की ताजा-तरीन फिल्म शादी - ब्याह पर आधारित है। असल जिंदगी में वे शादी के बारे में कहते हैं, हम जिस देश में पले-बढ़े हैं। उसकी सभ्यता और विचारधारा को समझना बहुत जरूरी है। उसमें शादी एक अहम भूमिका अदा करता है। ऐसे में आपके बड़े-बूढ़े चाहते हैं कि आप शादी करके खुश रहें, स्थायी हो जाएं, आपको भागदौड़ भरी जिंदगी में एक संतुलन मिले। आप जब घर लौटें, तो घर पर एक आधार पाएं। मैं इस विचारधारा से सहमत हूँ कि आपकी एक रिलेशनशिप हो जो शादी में तब्दील हो। मगर अब बात बदल गई है। पहले आप दो लोग एक समय में शादी करके एक साथ अपनी जिंदगी बनाते थे, मगर अब ऐसा हो गया है कि पहले जब आप अपनी जिंदगी संभाल पाएंगे, उसी के बाद किसी को अपने जीवन में ला पाएंगे। आज शादी में स्टैबिलिटी पहले देखी जाती है, मगर इसके बावजूद यही कहंगा कि शादी आज भी हमारे समाज में बहुत मजबूत है।

शेरा आज भी हमारे समाज में अहम है

इस वजह से सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि दोनों ने वास्तव में शादी कर ली है और अब वे हनीमून मना रहे हैं।

उदय चोपड़ा को कर चुकी हैं डेट

उदय चोपड़ा ने साल 2013 में नरगिस फाखरी को डेट करना शुरू किया था। एक-दूसरे को पांच साल तक डेट करने के बाद, दोनों ने 2017 में ब्रेकअप कर लिया था। हालांकि, एक इंटरव्यू में उदय के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करते हुए नरगिस ने कहा था, उदय और मैंने 5 साल तक डेट किया और वह भारत में मुझे मिले सबसे खूबसूरत इंसान थे। मैंने मीडिया के सामने यह कभी नहीं कहा क्योंकि लोगों ने मुझे अपने रिश्ते को छिपाकर रखने के लिए कहा था, लेकिन मुझे इसका अफसोस है।

आज की जनरेशन पर सोशल मीडिया का बहुत प्रेशर है

बीते वक्तों में अर्जुन एक तरफ ऑटोइम्पून डिसऑर्डर से गुजरते तो निजी जिंदगी में ब्रेकअप का सामना भी किया। बहुत पहले ही वे अपनी मां को भी गुंवा चुके थे। मगर उनका मानना है कि उनकी जिंदगी के उतार-चढ़ावों ने उन्हें मजबूत बनाया। वे कहते हैं, अगर जिंदगी में सबकुछ सुलझ जाए, तो जीवन बहुत बोरिंग हो जाएगा। मेरी जिंदगी में काफी ऊंच-नीच हुई हैं। आपके साथ जब कुछ बुरा हो रहा होता है, तो आप उसे एक बाधा के रूप में देख कर ये सोच सकते हो कि ऐसा मेरे क्यों हो रहा है? मैंने ऐसा क्या किया? आप हालात या लोगों को दोष दे सकते हैं, जो आम तौर पर होता है और आज की जनरेशन में तो ज्यादा ही होता है, क्योंकि आज सोशल मीडिया का प्रेशर बहुत ज्यादा होता है। आप लोगों की कामयाबी देखते हैं।

आज की जनरेशन पर सोशल मीडिया का बहुत प्रेशर है

इस वजह से सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि दोनों ने वास्तव में शादी कर ली है और अब वे हनीमून मना रहे हैं।

उदय चोपड़ा को कर चुकी हैं डेट

उदय चोपड़ा ने साल 2013 में नरगिस फाखरी को डेट करना शुरू किया था। एक-दूसरे को पांच साल तक डेट करने के बाद, दोनों ने 2017 में ब्रेकअप कर लिया था। हालांकि, एक इंटरव्यू में उदय के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करते हुए नरगिस ने कहा था, उदय और मैंने 5 साल तक डेट किया और वह भारत में मुझे मिले सबसे खूबसूरत इंसान थे। मैंने मीडिया के सामने यह कभी नहीं कहा क्योंकि लोगों ने मुझे अपने रिश्ते को छिपाकर रखने के लिए कहा था, लेकिन मुझे इसका अफसोस है।



तीन मिनट के रोल के लिए वसूले करोड़ों?

फिल्म डाकू महाराज में उर्वशी का रोल बहुत बड़ा नहीं है। मगर, शुरुआत से उन्होंने इस तरह का माहौल बनाकर रखा कि जैसे वे फिल्म की लीड अदाकारा हैं। इसे लेकर उन्हें काफी ट्रोलिंग भी झेलनी पड़ी है। अब एक बार फिर उर्वशी इस फिल्म में अपनी फीस को लेकर चर्चा में आ गई हैं। फिल्म में उर्वशी का रोल महज तीन मिनट का रहा है। मगर, मीडिया रिपोर्ट्स में दावे किए जा रहे हैं कि इसके लिए उन्हें अच्छा-खासा भुगतान किया गया है।

तीन मिनट का रोल और फीस इतने करोड़

फिल्म डाकू महाराज में उर्वशी रौतेला की फीस को लेकर अटकलें लगी हैं। कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावे किए जा रहे हैं कि अभिनेत्री को अपने करीब तीन मिनट के रोल के लिए तीन करोड़ रुपये फीस दी गई है। यानी एक मिनट के लिए एक करोड़ रुपये। हालांकि, खबरों में किए जा रहे दावों की अभी उर्वशी या किसी की तरफ से आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

इस गाने से बटोरी चर्चा

उर्वशी ने फिल्म डाकू महाराज के दाबिड़ी-दीबिड़ी गाने से काफी लोकप्रियता हासिल की है। इसमें वे नंदमुरी बालकृष्ण के साथ नजर आईं। गाने में उर्वशी के डांस मूव्स पर भी काफी विवाद हुआ। 12 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज हुई डाकू महाराज आज 21 फरवरी से नेटपिलक्स पर स्ट्रीम हो रही है।

राजकुमार राव निभाएंगे सौरव गांगुली का रोल

राजकुमार राव जल्द ही अपकमिंग बायोपिक फिल्म में पूर्व भारतीय क्रिकेट कैप्टन सौरव गांगुली की भूमिका में नजर आएंगे। काफी समय से हीरो को लेकर चर्चा हो रही थी कि ऑन-स्क्रीन सौरव की भूमिका में कौन नजर आएगा। अब खुद क्रिकेटर ने अनाउंस किया है कि बड़े पर्दे पर उनकी भूमिका राजकुमार राव अदा करेंगे। पश्चिम बंगाल के बर्धमान में गुरुवार को मीडिया से बात करते हुए सौरव गांगुली ने कहा, 'जो मैंने सुना है, उसके अनुसार राजकुमार राव लीड रोल निभाएंगे, लेकिन डेट को लेकर इश्यू है। इसलिए इस बायोपिक फिल्म के सिनेमाघरों में रिलीज होने में एक साल से ज्यादा का समय लग जाएगा।' यह बायोपिक फिल्म फिलहाल शूटिंग के स्टार्टिंग फेज में है। लेकिन इसकी अनाउंसमेंट के बाद से एक्टर के फैंस काफी एक्साइटेड हैं। हालांकि मेकर्स ने फिल्म को लेकर ज्यादा जानकारी नहीं दी है। फिल्म के नाम और अन्य कलाकारों का नाम भी अभी नहीं बताया गया है।

राजकुमार राव निभाएंगे सौरव गांगुली का रोल

इस वजह से सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि दोनों ने वास्तव में शादी कर ली है और अब वे हनीमून मना रहे हैं।

उदय चोपड़ा को कर चुकी हैं डेट

उदय चोपड़ा ने साल 2013 में नरगिस फाखरी को डेट करना शुरू किया था। एक-दूसरे को पांच साल तक डेट करने के बाद, दोनों ने 2017 में ब्रेकअप कर लिया था। हालांकि, एक इंटरव्यू में उदय के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करते हुए नरगिस ने कहा था, उदय और मैंने 5 साल तक डेट किया और वह भारत में मुझे मिले सबसे खूबसूरत इंसान थे। मैंने मीडिया के सामने यह कभी नहीं कहा क्योंकि लोगों ने मुझे अपने रिश्ते को छिपाकर रखने के लिए कहा था, लेकिन मुझे इसका अफसोस है।

मुश्किल वक्त मूव ऑन करने में यकीन करता हूँ

बीते लंबे समय से अपनी निजी जिंदगी के कारण चर्चा में रहने वाले अर्जुन कपूर इन दिनों खबरों में हैं अपनी नई फिल्म मेरे हसबैंड की बीवी को लेकर। अपनी पिछली फिल्म सिंघम अगेन में वे एक नेगेटिव किरदार में दिखे थे, मगर अब वे थिएटर में रोम-कॉम रूप में नजर आएंगे। इस मुलाकात में वे शादी, अपनी जिंदगी के उतार-चढ़ाव, सफर और अतीत को याद करते हैं। बीते लंबे समय से फिल्में थिएटर में जो जलवा नहीं दिखा पा रही हैं। मगर अर्जुन इस मामले में प्रेशर फील नहीं करते। वे कहते हैं, प्रेशर लेने से क्या होगा? हम अदाकार हैं। हमारा काम अभिनय करना है। आज का दर्शक बहुत समझदार हो गया है। इस सवाई को स्वीकारना होगा कि फिल्म अच्छी होगी तो चलेगी।

मेरे वैल्यूज आज भी जस के तस हैं

आज से त करीबन 13 साल पहले अर्जुन कपूर ने इश्कजादे से फिल्मों में एंट्री की थी। तब से लेकर अब तक के अपने सफर के बारे में वे कहते हैं, इश्कजादे में आपने जिस मासूम और वल्लरेबल लड़के को देखा था, वही वल्लरेबिलिटी आज भी है। दौर बदल गया है, चीजें बदल गई हैं, मगर मेरे कोर वैल्यूज के तस हैं। मेरे माता-पिता और परिवार ने जो कुछ सिखाया है। मैं आज भी वही हूँ। दस-बारह सालों में मेरी जिंदगी में कई उतार-चढ़ाव आए, मगर मैं अटल रहा हूँ। मैंने अपने काम से जवाब दिया, उन लोगों को जिन लोगों ने मुझ पर सवाल उठाए। मैं लगातार अपना काम करता गया। इश्कजादे, टू स्टेट, की एंड का, सदीप और पिंकी फरार, मुबारका जैसी फिल्मों से मैं ऑडियंस का प्यार पाता गया। मगर सिंघम अगेन में मुझे दर्शकों और क्लिटिक्स का प्यार मिला है, तो वो मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। अब मुझे अपनी इस नई फिल्म से बहुत उम्मीद है। मैं कह सकता हूँ कि मेरा सफर शानदार रहा और आज मैं जो कुछ हूँ, इसमें मेरी यात्रा का बहुत बाद योगदान रहा है।



तीन मिनट के रोल के लिए वसूले करोड़ों?

फिल्म डाकू महाराज में उर्वशी का रोल बहुत बड़ा नहीं है। मगर, शुरुआत से उन्होंने इस तरह का माहौल बनाकर रखा कि जैसे वे फिल्म की लीड अदाकारा हैं। इसे लेकर उन्हें काफी ट्रोलिंग भी झेलनी पड़ी है। अब एक बार फिर उर्वशी इस फिल्म में अपनी फीस को लेकर चर्चा में आ गई हैं। फिल्म में उर्वशी का रोल महज तीन मिनट का रहा है। मगर, मीडिया रिपोर्ट्स में दावे किए जा रहे हैं कि इसके लिए उन्हें अच्छा-खासा भुगतान किया गया है।

तीन मिनट का रोल और फीस इतने करोड़

फिल्म डाकू महाराज में उर्वशी रौतेला की फीस को लेकर अटकलें लगी हैं। कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावे किए जा रहे हैं कि अभिनेत्री को अपने करीब तीन मिनट के रोल के लिए तीन करोड़ रुपये फीस दी गई है। यानी एक मिनट के लिए एक करोड़ रुपये। हालांकि, खबरों में किए जा रहे दावों की अभी उर्वशी या किसी की तरफ से आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

इस गाने से बटोरी चर्चा

उर्वशी ने फिल्म डाकू महाराज के दाबिड़ी-दीबिड़ी गाने से काफी लोक

रोजाना अनाार का जुस पीने से नेचुरल एनर्जी बूझ होती है। इससे प्राकृतिक शर्करा और पोषक तत्व होते हैं जो शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

7 राज्य जयपुर टाइम्स

स्वर्ण पदक प्राप्त करने पर इंसानियत एकता समिति ने किया खान का अभिनंदन



जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला मुख्यालय पर भाईजी चौक स्थित राणाजी के नोहरे में इंसानियत एकता सेवा समिति की ओर से समिति संस्थापक करामत खान उर्दू अदीब के नेतृत्व में इस्लाम खान का सम्मान किया गया। गौरतलब है कि लखनऊ में 9 से 12 मई तक आयोजित 13वीं नेशनल चैंम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने पर माल्यार्पण कर, शॉल ओढ़ाकर व प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समिति उपाध्यक्ष महमूद अली राणा व मीडिया प्रभारी मोहम्मद अली पठान ने बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस दौरान समिति व्यवस्थापक इंजीनियर जाफर खान, एसीएमएचओ डॉ. एहसान गौरी, डॉ. अख्तर खान, डॉ. शहनवाज खान, सुलेमान मनिहार, महबूब खान, मोहम्मद अली राणा, साबिर खान दौलतखानी, फारूक चौहान, फैसल गौरी, अबास खान मोयल, अख्तर खान स्कनखानी आदि मौजूद रहे।

कॉरिडोर बजट आवंटित करने पर जताया केंद्र सरकार का आभार



जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। हनुमान धोरा स्थित भगवान श्री देवनारायण मंदिर में श्री देवनारायण भगवान मंदिर ट्रस्ट की बैठक ट्रस्ट अध्यक्ष नरेन्द्र गुर्जर की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में ट्रस्ट अध्यक्ष नरेन्द्र गुर्जर ने भगवान श्री देवनारायण कॉरिडोर के लिए बजट आवंटित करने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राजस्थान की भजनलाल सरकार, गृह राज्य मंत्री जवाहरसिंह बेदम का आभार जताया। गुर्जर ने बताया कि देवधाम मालासेरी इंगूरी के पुजारी हेमराज पोखवाल की सक्रियता का ही परिणाम है कि भगवान श्री देवनारायण कॉरिडोर के लिए सरकार ने बजट आवंटित किया है। जिससे गुर्जर समाज के पांचो तीर्थ स्थान भगवान श्री देवनारायण कॉरिडोर के रूप में विश्व भर में अपनी विशेष पहचान हासिल करेंगे। इस दौरान मनसुखा खटाणा, काजदीश दौराता, मनोज बोकाण, मदनलाल बोकाण, देबूराम खटाणा, पुखराज लीलू, मोहित लीलू सहित गुर्जर समाज के अनेक लोग उपस्थित रहे।

महेश तंवर बने महात्मा ज्योतिबा फूले संस्थान के अध्यक्ष

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। महात्मा ज्योतिबा फूले राष्ट्रीय संस्थान शाखा सुजानगढ़ की कार्यकारिणी की मीटिंग का आयोजन रेलवे फाटक नंबर तीन के पास स्थित माली समाज धर्मशाला में किया गया। बैठक में पुरानी कार्यकारिणी को भंग कर नई कार्यकारिणी घोषित की गई। जिसमें महेश तंवर अध्यक्ष, अजय कुमार सैनिक महासचिव और मिथिलेश तंवर कोषाध्यक्ष बनाए गए। इस मौके पर निवर्तमान अध्यक्ष बाबूलाल कारोडिया ने नव घोषित पदाधिकारियों को कार्यभार सौंपा। इस दौरान संस्थान के शाखा संरक्षक कन्हैयालाल मारोठिया, निवर्तमान महासचिव सोहनलाल टाक, निवर्तमान कोषाध्यक्ष मुकेश सांखला, एड. सुरजमल यादव, एड.नवरतन सैनी, सुशील तंवर, अमित मारोठिया, संजय सांखला, शंकर लाल इंदोरिया, सुनील टाक व अन्य समाज बंधु उपस्थित रहे।

आश्रम, घरों व दुकानों पर अंडे फेंक कर माहौल बिगाड़ने का प्रयास स्थानीय लोगो ने पुलिस में की शिकायत

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। बीती रात को असामाजिक तत्वों की ओर से शहर का माहौल खराब करने का प्रयास करने का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार शहर के पूर्णनाथ जी के आश्रम की दीवारों व आश्रम के आसपास के घरों व दुकानों पर कुछ लडकों की ओर से अंडे फेंकने का मामला का सामने आया है, जिसके संबंध में स्थानीय लोगो ने रविवार को लक्ष्मणगढ़ पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और मौका मुआयना किया। वही स्थानीय लोगो ने पुलिस को एक प्रार्थना पत्र के माध्यम से अपनी शिकायत भी दर्ज करवाई और अंडे फेंकने वाले लड़कों को गिरफ्तार कर उन पर कार्रवाई करने की मांग की है। विश्व हिंदू परिषद के रतन सिंह बगड़ी ने बताया कि शनिवार रात को असामाजिक तत्वों की ओर से आश्रम घरों व दुकानों पर अंडे फेंक कर लक्ष्मणगढ़ का माहौल खराब करने का प्रयास किया जा रहा है जिसके संबंध में प्रशासन से हमारी मांग है कि जल्द जल्द उक्त मामले की जांच की जाए। इस दौरान महेश नाथ, मुकेश नाथ, रतन सिंह बगड़ी, राजेंद्र माटोलिया, सचिन माटोलिया सहित स्थानीय लोग मौजूद रहे।

नेत्र रोग जागरूकता शिविर कल

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। राजस्थान पेंशनर समाज की स्थानीय शाखा की ओर से मंगलवार को राजकीय पीसीबी उ.मा. विद्यालय में निशुल्क नेत्र रोग जागरूकता शिविर का आयोजन किया जाएगा। शाखा अध्यक्ष रेखांमार मेहरड़ा ने बताया कि नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. नरेन्द्र चौहान की ओर से नेत्र रोगियों की जांच कर उन्हें उचित परामर्श दिया जाएगा और ऑपरेशन योग्य रोगियों का चयन किया जायेगा। पेंशनर समाज की सुजानगढ़ शाखा के मंत्री सुरजाराम डाबरिया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विद्याधर पारीक, कोषाध्यक्ष मन्नालाल भींजर सहित पेंशनर समाज के अनेक सदस्य शिविर की तैयारियों में जुटे हुए हैं।

केंद्र सरकार ने ममता कार्ड की बाध्यता की खत्म : यू-विन ऐप से मिलेगी हर जानकारी

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। गर्भवती महिलाओं और नवजात बच्चों के टीकाकरण की प्रक्रिया अब और भी सुगम हो गई है। केंद्र सरकार ने ममता कार्ड की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया है। अब देश के किसी भी कोने में टीकाकरण कराने के लिए यू-विन ऐप का इस्तेमाल किया जा सकेगा। यह ऐप न केवल टीकाकरण संबंधी पूरी जानकारी मोबाइल पर उपलब्ध कराएगा, बल्कि समय पर टीका नहीं लगने पर अलर्ट भी जारी करेगा। कोरोना काल में सफलतापूर्वक इस्तेमाल किए गए कोविन पोर्टल को ही अब यू-विन पोर्टल के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है।

ममता कार्ड की बाध्यता समाप्त

झुंझुनू के मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) डॉ. छोटेलाल गुर्जर ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि अब तक लाभार्थियों को टीकाकरण के लिए ममता कार्ड साथ रखना अनिवार्य था, लेकिन अब यह बाध्यता समाप्त कर दी गई है। अब केवल आधार नंबर और मोबाइल नंबर के आधार पर ही टीकाकरण की पूरी जानकारी यू-विन ऐप पर आसानी से उपलब्ध हो सकेगी।

ऐप बताएगा कब, कहाँ और कौन सा टीका लगा

यू-विन ऐप लाभार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण साबित होगा। यह ऐप यह जानकारी देगा कि बच्चे या गर्भवती महिला को कब, कहाँ और कौन सा टीका लगाया गया है। इसके साथ ही, कितने टीके अभी लगने बाकी हैं, इसकी जानकारी भी ऐप पर उपलब्ध रहेगी।



टीकाकरण में नहीं आएगी बाधा

इस ऐप की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यदि लाभार्थी किसी कारणवश अपना स्थान परिवर्तित करते हैं, तो भी उनके टीकाकरण में कोई बाधा नहीं आएगी। यदि कोई लाभार्थी अपने मूल स्थान से बाहर है, तो संबंधित ब्लॉक के अधिकारी परिजनों से संपर्क कर उन्हें नए स्थान पर टीका लगवाने में हर संभव सहयोग प्रदान करेंगे। इस पहल से यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि कोई भी बच्चा या गर्भवती महिला टीकाकरण से वंचित न रहे।

छूट गए बच्चों को ढूंढना होगा आसान, मिलेगा अलर्ट

चिकित्सा विभाग के आंकड़ों के अनुसार, हर वर्ष बड़ी संख्या में बच्चे टीकाकरण से छूट जाते हैं, जिनकी पहचान करना और उन्हें ढूंढना एक

बेंगलुरु में 7-8 नवंबर को होगा इंडियन फार्मा फेयर का 14 वां संस्करण

देशभर की 80+ फार्मा कंपनियां करेंगी भागीदारी



कदम साबित होगा। इससे पूर्व इंडियन फार्मा फेयर का 13वां संस्करण रायपुर, छत्तीसगढ़ में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया था। उद्घाटन समारोह में विधानसभा अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, सी.जी.आई.एस.सी. के अध्यक्ष राजीव अग्रवाल और सीसीडीए के महासचिव अविनाश अग्रवाल उपस्थित थे। प्रदर्शनी के दूसरे दिन 2 मई को इंडियन फार्मा फेयर अवार्ड समारोह

आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि श्याम बिहारी जायसवाल (चिकित्सा मंत्री, छत्तीसगढ़) तथा अति विशिष्ट अतिथि दीपक महरूके (अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विस कॉर्पोरेशन लिमिटेड), डॉ. धर्मेन्द्र कुमार दास और अमित साहू (प्रदेश प्रवक्ता, भाजपा) मौजूद रहे। आयोजकों के अनुसार, बेंगलुरु संस्करण में और अधिक भागीदारी व इन्वोलेशन की उम्मीद की जा रही है।

200 मीटर दूर राजकीय चिकित्सालय जाने के लिए काटना पड़ता हैं एक-डेढ़ किमी का चक्कर

गम्भीर रोगियों को चौपहिया वाहन से ले जाने में आती हैं मुश्किलें

जयपुर टाइम्स

बिर्जोलिया(नि.सं.)। कस्बे के छोटा दरवाजा और उसके आसपास परकोटे के अंदर रहने वाले बाशिंदे अगर कभी गम्भीर रूप से बीमार हो जाए और उनको चौपहिया वाहन से उप जिला चिकित्सालय ले जाना पड़े तो 100-200 मीटर पर स्थित चिकित्सालय जाने के लिए एक से डेढ़ किमी का चक्कर लगाना पड़ता है।कारण की रियासत काल में निर्मित छोटा दरवाजा की बनावट ऐसी हैं कि इसके अंदर से सिर्फ दुपहिया वाहन हो निकल सकते हैं चौपहिया वाहन नहीं । कस्बे के चारों ओर विशाल परकोटा बना हुआ हैं। ऐसे में चिकित्सालय जाने के मात्र तीन रास्ते हैं। सब्जीमंडी के पास स्थित फूटाकोट हो कर पथिक पार्क-जागेश्वर महादेव मंदिर की तरफ से या राजपुत मोहल्ले के फूटाकोट से मंदाकिनी महादेव रोड द्वारा अथवा बड़ा दरवाजा के अंदर से

रामपुरा डाबड़ी में 19 मई को होगा किसान आक्रोश प्रदर्शन

जयपुर(कासं.)। भारतीय किसान संघ ने अपने पदाधिकारियों पर झूठा मुकदमा दर्ज करने के विरोध में सोमवार 19 मई को सुबह 10 बजे रामपुरा डाबड़ी उपखंड कार्यालय के बाहर किसान आक्रोश प्रदर्शन करने की घोषणा की है। यह प्रदर्शन संगठन के प्रांत महामंत्री डॉ. सांवर मल सोलेट सहित 10 अन्य पदाधिकारियों के खिलाफ दर्ज कथित झूठे मामले को लेकर किया जाएगा। संघ के प्रांत सह प्रचार प्रमुख डॉ. लोकेश कुमार चंदेल ने जानकारी दी कि रामपुरा डाबड़ी के उपतहसीलदार ने राजकार्य में

बाधा डालने जैसे कई झूठे आरोप लगाकर थाने में शिकायत दर्ज कराई है, जो कि पूरी तरह से तथ्यहीन है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह कदम किसानों की आवाज दबाने के इरादे से उठाया गया है। प्रांत अध्यक्ष कालूराम बागड़ा ने कहा कि किसान संघ के पदाधिकारी तहसीलों में जाकर भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाते हैं और जनहित के मुद्दों पर अधिकारियों से जवाब मांगते हैं, जिससे कुछ अफसरशाही वर्ग असह्य होता है। इसी असहजता के चलते झूठे मुकदमे का षड्यंत्र रचा गया है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि किसान संघ इन दबावों से डरने वाला नहीं है। संगठन पहले से कहीं अधिक ताकत और प्रतिबद्धता के साथ किसानों के अधिकारों और समस्याओं को उठाता रहेगा। उन्होंने सभी किसानों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में आकर इस प्रदर्शन को सफल बनाएं। भारतीय किसान संघ का यह विरोध प्रदर्शन न केवल संगठन के प्रति अधिकारियों के रवैये का जवाब होगा, बल्कि कृषक हितों की रक्षा के लिए एक मजबूत संदेश भी देगा।

जयपुर,सोमवार 19 मई, 2025

चित्रकार चंद्र प्रकाश ने शहीद मोगा का तेल चित्र परिजनों को किया भेंट



जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। प्रसिद्ध चित्रकार चंद्र प्रकाश गुप्ता ने ऑपरेशन सिंदूर में शहीद हुए मेहरादारी के सुरेन्द्र कुमार मोगा का तेल चित्र उनके परिजनों को सौंपा। इस मौके पर मेहंदी आर्टिस्ट मोहनलाल चौहान भी मौजूद रहे। शहीद के तेल चित्र को देखकर वीरांगना सीमा के साथ ही उनके बच्चे भावुक हो गए और उनकी आंखें नम हो उठी। गौरतलब है कि चित्रकार चंद्र प्रकाश गुप्ता का शहीदों के परिजनों से मिलकर जीवंत तेल चित्र भेंट करने का अभियान पिछले 21 साल से जारी है। वह अपनी क्यूची से देश प्रेम बांय करते हैं। उन्होंने अब तक 4 शहीदों के तेल चित्र बनाए हैं और शहीदों के घर जाकर उनके परिजनों को तेल चित्र भेंट करते हैं। बता दें कि मेहरादारी के रहने वाले वायु सेना के जवान मोगा ऑपरेशन सिंदूर के दौरान उधमपुर में गत 10 मई को शहीद हुए थे।

सेवार्थ फाउंडेशन का सिलाई प्रशिक्षण शिविर आयोजित

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। हिंदुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स राजस्थान राज्य जिला मुख्यालय गोकुलपुरा सीकर के तत्वाधान में ग्रीष्मकालीन लघु उद्योग प्रशिक्षण व अभिरूचि कौशल विकास शिविर का आयोजन पिपराली के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पीपली नगर में आयोजित किया जा रहा है। सिलाई प्रशिक्षण शिविर सेवार्थ फाउंडेशन की ओर से लगाया जाएगा। शिविर सहप्रभारी माया खोचड़ ने बताया कि यह शिविर सुलोकना कुमारी प्रधानाचार्य रा उ मा वि गोकुलपुरा के सानिध्य में लगाया जाएगा। उन्होंने बताया कि सेवार्थ फाउंडेशन की ओर से शिविर के लिए सिलाई मशीन दी गई है जो प्रशिक्षण के पश्चात हिंदुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स राजस्थान राज्य जिला मुख्यालय गोकुलपुरा सीकर को दे दी जाएगी। सिलाई सीखने वाली महिलाओं में विशेष उत्साह देखा जा रहा है। सेवार्थ फाउंडेशन की ओर से ही उनको समापन पर मोमेंटो और तीन प्रतियोगियों को नगद पुरस्कार दिया जाएगा। माया खोचड़ की ओर से सेवार्थ फाउंडेशन का आभार व्यक्त किया गया कि वह लगातार महिला स्वरोजगार के लिए कार्य कर रहे हैं। इस मौके पर प्राचार्या सुनीता आर्य, शकुंतला, मिथुन रामनिवास, राजवीर आदि उपस्थित रहे।

कार्यालय: महिपाल दौराता एडवोकेट, खेतड़ी जिला झुन्झुनू (राज0)
मोबाईल नं. 09602820615 दिनांक- 13.05.2025
रजिस्टर्ड विधिक नोटिस बनाम
- गोपाल पुत्र स्व0 औमप्रकाश - विजय प्रकाश पुत्र स्वथ औमप्रकाश - राधा देवी पत्नी श्री गोपाल - ज्योति पत्नी श्री विजयप्रकाश जाति -बाल्मिकी, निवासी खेतड़ीनगर, तहसील- खेतड़ी, जिला - झुन्झुनू (राज0) महारथ, मैं मेरे अभिभाष्य श्रीमती सन्तोष देवी पत्नी स्व0 औमप्रकाश, जाति बाल्मिकी निवासी खेतड़ी नगर तह0 खेतड़ी जिला झुन्झुनू (राज0) के आदेशानुसार व निर्देशानुसार आपको निम्नलिखित विधिक नोटिस देता हूँ कि - कि मेरे अभिभाष्य के साथ आये दिन वर्ष 2019 से ही लगातार गाली गलौच करते आ रहे हो तथा आप गोपाल एवं विजयप्रकाश आये दिन शराब पीकर मेरे अभिभाष्य के साथ मारपीट करना एवं गाली गलौच करना तथा सभी के द्वारा समय पर भोजन आदि की व्यवस्था ना करने के कारण मेरे अभिभाष्य ने आप सभी को आपके इस व्यवहार के कारण आप सभी को एवं आपकी आल औलاد को अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति जो भारत वर्ष में जंहा है जैसी है जिस हालत में है से बेदखल कर दिया है। भविष्य में मेरे अभिभाष्य की समस्त चल व अचल सम्पत्ति से आप सभी एवं आपकी आल औलद का कोई सम्बन्ध सरोकार नहीं रहेगा इसलिए भविष्य में आप सभी एवं आपकी आल औलद के साथ अगर कोई व्यक्ति लेन देन करता है या आप एवं आपकी आल औलद कोई भी और कानूनी कार्य करते है तो उसके लिए आप स्वयं जिम्मेवार रहेंगे। मेरे अभिभाष्य को कोई जिम्मेवारी नहीं होगी । - यह कि अब आपका मेरे अभिभाष्य से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध सरोकार नहीं रहेगा । नोट: इस नोटिस की एक प्रति मैंने अपने कार्यालय में रखी है आपकी संभाल कर रखना वरक्कत कार्यवाही न्यायालय में आपसे तलब करवाई जा सकती है । दिनांक: 13.05.2025
भवदीय, (महिपाल दौराता एडवोकेट खेतड़ी जिला झुन्झुनू (राज0)

नाम परिवर्तन
मेरे पासपोर्ट में मेरे पिता का नाम लक्ष्मण राम बिजारनिया (LAXMAN RAM BIJARNIA) तथा मेरे गांव का नाम चारिया (CHARIYAN) अंकित है, जो कि असत्य हैं। जबकि मेरे पिता का सही व वास्तविक नाम लक्ष्मण राम बिजारनिया (LAXMAN RAM BIJARANIA) तथा गांव का नाम चारिया (CHARIYA) है। हनुमान प्रसाद बिजारनिया पुत्र लक्ष्मण राम बिजारनिया निवासी ग्राम चारिया, तहसील सुजानगढ़ (चूरू) राजस्थान

नाम परिवर्तन

मेरे पासपोर्ट में मेरा नाम कुशला राम सिद्ध दर्ज है। अब मैंने मेरा नाम कुशल नाथ सिद्ध (KUSHAL NATH SIDH) रख लिया है। भविष्य में मुझे कुशल नाथ सिद्ध पुत्र अमरनाराथ सिद्ध, गाँव दुंकर तहसील वीदासर जिला चूरू (राजस्थान) नाम से जाना पहचाना जावें।

राजस्थान सरकार

विचार्य विषयों के निर्धारण के लिए प्रतिवादी के नाम

आव्हान पत्र

(आर्डर 5 रूल जाबता दीवानी)

न्यायालय- श्रीमान उपखण्ड अधिकार
मोहनी वादी

स्थान- रतनगढ़
विरूद्ध. अमित कुमार अतिवादी

वाद

मु.सं. 8.1 सं. 2024

श्री सरोज पुत्र w/o मुन्नालाल जाति मेहरारू निवास स्थान शितला चौक, हरिजन बस्ती, चुरू (राज.), क्योंकि वादीनी ने आपके विरुद्ध एक दावा खाता विभाजन

का उत्तर देने के लिए ता. 27 माह 5 2025

दायर किया अतः आपको

बच्चे दिन के व्यक्तिशः या वकील द्वारा जो कि मुकदमे हाल से परिचित किया गया है मुकदमे सम्बन्धी समस्त महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर दे सकें या जिसके साथ ऐसा व्यक्ति हो जो प्रश्न का उत्तर दे सके उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया जाता है ।

ज्ञात रहे कि उपरोक्त तारीख को आप उपस्थित न हवें तो आपको अनुस्थिति में सुनकर निर्णय कर दिया जावेगा।

मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय को मुद्रा युक्त दिनांक 14 माह 5 2025 को जारी किया गया।

उपखण्ड अधिकारी

रतनगढ़

नहरबन्दी पूर्ण, आज कर्मसाना हैडवर्क्स पर पहुंचेगा पानी



जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। 30 दिन की नहरबन्दी के बाद सोमवार को हैडवर्क्स कर्मसाना पर पानी पहुंचेगा। जिससे क्षेत्र में एकान्तर चल रही पेयजल व्यवस्था की जगह नियमित पेयजल आपूर्ति की शुरु होगी। तारानगर जलदाय विभाग अधिशाषी अभियन्ता राजेश कुमार जागिड़ ने जानकारी देते हुए बताया कि नहरबन्दी के दौरान एक दिन छोड़कर पेयजल आपूर्ति विभागीय आरडब्ल्यूआर व विभाग की ओर से करवाए गए कॉफ़र डैम से की जा रही थी। जल्द हैड वर्क्स कर्मसाना पर पानी की आवक शुरु हो जाएगी। जिससे नियमित पेयजल आपूर्ति की जाएगी। नहरबन्दी के दौरान विभाग की कर्मसाना व ललानिया स्थित डिग्गीयों की सफाई पूर्ण रूप से करवा दी गई है। साथ ही विभागीय नहर की साफ सफाई का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। पानी चोरी रोकने के लिए विभागीय नहर की पेट्रोलिंग भी निरन्तर करवाई जाएगी। एक-दो दिन में क्षेत्र में नियमित रूप से जलापूर्ति प्रारम्भ कर दी जाएगी।

पूर्व राजस्व मंत्री ने किए बालाजी के दर्शन



जयपुर टाइम्स

सालासर(निस)। सिद्ध पीठ सालासर बालाजी धाम में रविवार दोपहर को पूर्व राजस्व मंत्री रामलाल जाट ने सालासर पहुंचकर बालाजी महाराज के दर्शन किए। सालासर पहुंचने पर मंदिर के पुजारी नागरमल पुजारी, टीकुराम ढाका, नरेंद्र गुलरिया, नारायण भीलवाड़ा, सिकंदर खान शोभासर, गिरधारी लाल गोदारा सहित सैकड़ों लोगों ने चौधरी मिश्रान भंडार पर स्वागत किया। उन्होंने कहा कि मैं लगातार काफी वर्षों से बालाजी महाराज के दर्शन करने आता हूं और जो बालाजी महाराज से जो मन्न्त मांगता हूं, वह पूरी होती है। इस दौरान पूर्व राजस्व मंत्री के साथ मनोहर लाल ढाका, एडिशनल एसपी विद्या प्रकाश मुंडे साथ रहे।

पहाड़ी पर उगी घास में लगी आग



जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। इंगर बालाजी धाम के सामने स्थित पहाड़ी पर रविवार दोपहर करीब साढ़े तीन बजे अचानक आग लग गई। जिससे पहाड़ी पर उगी घास जल कर खाक हो गई। आगजनी की सूचना पर फायर ब्रिगेड की गाड़ियां मौके पर पहुंची, लेकिन आग पहाड़ी पर होने से दमकल की गाड़ियों के पाइप आग तक नहीं पहुंचे। जिसके कारण ग्रामीणों ने अपने प्रयासों से करीब तीन घंटे की कड़ी मेहनत के पश्चात आग पर काबू पाया।

कब्रिस्तान के पास भूमि पर कब्जे को लेकर विवाद



जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। करबे में वार्ड नं 28 कब्रिस्तान के पास एक भूमि पर कब्जे को लेकर विवाद हो गया। सूत्रों ने बताया कि विनोद कुमार बेगवानी का पूर्व में कब्जा है, दूसरा पक्ष जबरन कब्जा करने की बात पर दो पक्षों में आपसी विवाद हो गया। विवाद की सूचना पर राजलदेसर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने मौके से दोनों के कुल आठ लोगों को शांति भंग में गिरफ्तार किया। धानाधिकारी कमलेश कुमार ने बताया कि कब्रिस्तान के पास एक भूखण्ड पर कब्जे की बात को लेकर दो पक्षों में विवाद की सूचना मिली जिस पर मौके पर पहुंचकर शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए समझाइश की। दोनों ही पक्ष भड़काऊ होने से दोनों पक्षों के आनन्द पंवार पुत्र रूपचन्द पंवार वाल्मीकि उम्र 35 साल निवासी वार्ड नम्बर 41 रतनगढ धाना रतनगढ कालू पुत्र गोपालराम वाल्मीकी उम्र 50 साल निवासी वार्ड नम्बर 41 रतनगढ धाना रतनगढ नरेन्द्र पुत्र कैलाश चांवरिया उम्र 22 साल निवासी वार्ड नम्बर 41, नल्युराम पुत्र रोहिताश पंवार वाल्मीकी उम्र 35 साल निवासी वार्ड नम्बर 41 रतनगढ, श्रीकृष्ण चोमाल पुत्र गौरीशंकर चोमाल उम्र 57 साल निवासी वार्ड नम्बर 34 रतनगढ धाना रतनगढ, शुभकरण पुत्र ब्रह्मानन्द वाल्मीकि उम्र 20 साल निवासी वार्ड नम्बर 41 रतनगढ धाना रतनगढ, मुकेश शर्मा पुत्र देवराज शर्मा उम्र 36 साल निवासी वार्ड नम्बर 10 चूरु पुलिस थाना कोतवाली चूरु, विनोद बैगवानी पुत्र पेमराज उम्र 58 साल निवासी वार्ड नम्बर 28 राजलदेसर थाना राजलदेसर को भारतीय नागरिक सुरक्षा सहिता 2023 की धारा 170 के तहत गिरफ्तार किया।

बाबा साहेब के विचारों को आत्मसात कर उनके पद चिन्हों पर चले : राठौड़

टाउन हॉल में मेघवाल समाज ने किया राठौड़ व सहारण का अभिनंदन

जयपुर टाइम्स

चूरु(निस)। जिला मुख्यालय स्थित टाउन हॉल में मेघवाल समाज की ओर से रविवार को पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ व विधायक हरलाल सहारण का भव्य अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर समाज के पदाधिकारियों व वरिष्ठ जनों ने 51 किलों की माला व साफा पहनाकर राठौड़ व सहारण का अभिनंदन किया। कार्यक्रम संयोजक नरेंद्र कंवल ने बताया कि जिला मुख्यालय स्थित पौडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस की जमीन पर बाबा साहेब अंबेडकर ऑडिटोरियम बनाने की घोषणा पर इनका अभिनंदन किया गया। गौरतलब है कि गत 21 अप्रैल को नेता प्रतिपक्ष राठौड़ के जन्म दिवस पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अंबेडकर ऑडिटोरियम बनाने की घोषणा की थी। इस उपलब्धि के लिए रविवार को चूरु विधानसभा क्षेत्र के मेघवाल समाज के लोगों ने इनका अभिनंदन किया। कार्यक्रम के



मुख्य अतिथि पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ व विधायक हरलाल सहारण रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के जिला अध्यक्ष अजीत मेघवाल व भाजपा उपाध्यक्ष नरेंद्र कंवल ने की। वहीं कार्यक्रम के

के विशिष्ट अतिथि भाजपा नेता पराक्रम सिंह राठौड़, हरिराम चोपड़ा, उप प्रधान सपना तालनियां, पूर्व जिला अध्यक्ष रामस्वरूप सातड़ा, जिला महामंत्री दीनदयाल खारडिया, मंडल अध्यक्ष अमित कंवल, सरपंच

मित्रता की अनूठी मिसाल, समाज को संदेश

दूगड़ विद्यालय के पूर्व छात्रों ने दिवंगत साथियों की स्मृति में कराया पुण्य कार्य, बैठने के लिए रखवाई 32 बेंच

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के दूगड़ विद्यालय के पूर्व छात्र राजेंद्र कालवा व उनकी मित्र मंडली ने अपने दिवंगत मित्र वसीम मुगल व श्रीकांत ओझा की स्मृति में अनुकरणीय पहल करते हुए समाज को भाईचारे और सेवा करने का अनूठा संदेश दिया है। पूर्व छात्रों ने पहल करते हुए शहर के प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर आमजन की सुविधा हेतु प्रथम चरण में 16 बेंचें लगवाईं। इन बेंचों को एसडीएम कार्यालय, पर्यावरण चौक, अशोक स्तंभ, आपणी योजना कार्यालय, पौडब्ल्यूडी कार्यालय, अंबेडकर चौक, पांच भाई चौक, बालाजी मंदिर (न्यू लाइफ हॉस्पिटल के सामने), कल्याणपुरा चौक, बीकानेर फाटक सहित शहर के भीड़भाड़ वाले स्थलों पर स्थापित किया गया। इस पुण्य कार्य की अगली कड़ी में 18 मई को और 16 बेंचें शहर के अन्य स्थानों पर लगाई जाएंगी। यह सेवा कार्य दिवंगत मित्रों की सच्ची श्रद्धांजलि और समाज को एक सकारात्मक संदेश है कि आपसी प्रेम, सौहार्द और मित्रता से समाज को संवारा जा सकता है। इस मौके पर डॉ निर्मल पारीक, डॉ चन्द्रभान जागिड़, डॉ



किशन सिहाग, अभिषेक पारीक, मदन ओझा, कमलकांत शर्मा, प्रकाश सोनी, गोविंद प्रजापत, हेमंत सारस्वत, जुगल किशोर शर्मा, शिवकांत शर्मा, साकेत मिश्रा, कनक भोजक, गोविंद पारीक, मुकेश भामा, देवेंद्र सिंह, नवीन प्रजापत, चिरंजीलाल प्रजापत, मंगलचंद, बुलाकी शर्मा, मनीष स्वामी सहित कई नागरिक उपस्थित रहे। समाज के लिए यह कार्य प्रेरणा का स्रोत बनता जा रहा है, जो आने वाली पीढ़ियों को भी मित्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व का महत्व समझाने में सहायक सिद्ध होगा। राजकीय उपजिला अस्पताल में कार्यक्रम का संचालन अभिषेक पारीक ने किया।

कांग्रेस का बूथ स्तर पर मजबूत बनाने का लक्ष्य

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद डोटाररा के निर्देश पर तारानगर विधानसभा क्षेत्र के रातूसर मंडल में कांग्रेस की मासिक बैठक का आयोजन किया गया। साहवा ब्लॉक अध्यक्ष मदनलाल पांडिया ने बैठक की अध्यक्षता की। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमिटी के सचिव और तारानगर विधानसभा प्रभारी रामनिवास बिड़ोदी मुख्य अतिथि रहे। मंडल अध्यक्ष काशीराम पांडिया ने माल्यार्पण कर अतिथियों का स्वागत किया। प्रभारी बिड़ोदी ने कांग्रेस को बूथ स्तर पर सशक्त बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक पंचायत में हर महीने बैठक आयोजित करना अनिवार्य है। इसकी जिम्मेदारी पंचायत अध्यक्ष की होगी। बैठक में कई वरिष्ठ नेता मौजूद



रहे। इनमें साहवा ब्लॉक अध्यक्ष मदनलाल पांडिया, जिला परिषद सदस्य प्रतिनिधि शिशपाल सारण, रातूसर सरपंच गिरधारीलाल स्वामी आदि

शामिल रहे। पिचकराई सरपंच प्रतिनिधि चेताराम, शिमला सरपंच अजीत खान और अन्य मंडल अधिकारी भी उपस्थित रहे।

3 आर (रिसाइकिल, रियूज, रिड्यूस) कलेक्शन ड्राइव : विद्यार्थियों में नैतिकता और मानव मूल्यों का विकास

जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा का विशेष प्रयास

संपूर्ण जिले के विद्यालयों में विद्यार्थियों ने जमा करवाई 70868 पुस्तकें, 13339 जूते, 10030 खिलौने, 8481 कपड़े और 4524 अन्य अनुपयोगी सामग्री

जयपुर टाइम्स

चूरु(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा की पहल पर संपूर्ण जिले के राजकीय विद्यालयों में शैक्षणिक सत्र के आखिरी दिन 3 आर (रिसाइकिल, रियूज, रिड्यूस) कलेक्शन ड्राइव चलाया गया। इस कलेक्शन ड्राइव का उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिकता और मानव मूल्यों का विकास करना था। कलेक्शन ड्राइव में विद्यार्थियों ने घर से

अनुपयोगी सामान को लाकर विद्यालय में जमा करवाया ताकि जस्तुतमंदों के काम आ सके। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने बताया कि इस पहल में जिले के छात्र-छात्राएं स्वच्छता से भाग ले रहे हैं और अपने विद्यालयों के माध्यम से रिसाइकिल योग्य सामग्री एकत्र कर रहे हैं। इस पहल का उद्देश्य बच्चों में पर्यावरण और मानवता के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करना और नैतिक व मानव मूल्यों का संचार करना है। सीडीईओ गोविंद सिंह राठौड़ ने बताया कि विद्यार्थी अपने घरों और आस-पड़ोस से अनुपयोगी पुस्तकें, कपड़े, खिलौने और अन्य अनुपयोगी सामग्री संग्रहित कर विद्यालयों में जमा कर रहे हैं।

विद्यार्थियों ने जमा करवाया अनुपयोगी सामान, जस्तुतमंदों के आगवा काम

जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशानुसार

पुस्तक संवाद कार्यक्रम अंतर्गत जारी की 871417 पुस्तकें

विद्यार्थियों में पुस्तक संस्कृति लौटाने की दिशा में जिला कलक्टर सुराणा के नवाचार पुस्तक संवाद कार्यक्रम अंतर्गत जिले के सभी राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को पुस्तकें जारी की गईं। संपूर्ण जिलेभर के विद्यालयों में विद्यार्थियों को 871417 पुस्तकें जारी की गई हैं। जिले के पुस्तकालयों में करीब 65 प्रतिशत पुस्तकें विद्यार्थियों को जारी की गई हैं। इन पुस्तकों को पढ़कर गोष्मावकाश के बाद विद्यार्थी समीक्षा लिखेंगे। अच्छी समीक्षा लिखने वाले विद्यार्थियों में विद्यालय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को ब्लॉक स्तर तथा ब्लॉक स्तर पर चयनित विद्यार्थियों को जिला स्तर पर जिला कलक्टर सम्मानित करेंगे। गौरतलब है कि पूर्व में 2 बार पुस्तक संवाद कार्यक्रम अंतर्गत जिला कलक्टर ने अपने आवास पर अच्छी समीक्षा लिखने वाले विद्यार्थियों से संवाद कर सम्मानित किया है। सीडीईओ गोविंद सिंह राठौड़ ने बताया कि आज के डिजिटल समय में जहां व्यक्ति पुस्तकों से दूर होता जा रहा है, ऐसे में यह अभिनव पहल विद्यार्थियों को पुनः पुस्तक पढ़ने के आनन्द को अनुभव कर सकने में लाभदायक साबित होगी। इस पहल में विद्यालयों के शिक्षकों ने बड़-चढ़कर भाग लिया, परिणामस्वरूप जहां पुस्तकें अलमारियों व रेक्स में बंद थी, वे बाहर आई और विद्यार्थियों को पढ़ने को मिलीं। विद्यालयों से 65 प्रतिशत पुस्तकें छात्रों के पास पहुंची है, जिसका सदुपयोग छात्र अवकाश के समय पुस्तकें पढ़कर समीक्षा लिखने में करेंगे। इसी क्रम में कोड चूरु नवाचार के माध्यम से एक मुहिम चलाकर करीब 7000 विद्यार्थियों को इससे जोड़ा गया है। यह विद्यार्थी कोडिंग में बहुत अच्छा कार्य करने लगे हैं। भविष्य में इन्हें बहुत अच्छे रोजगार अवसर मिल सकें, इसके लिए प्रयासरत हैं।

जिले के सभी राजकीय विद्यालयों में सत्र के आखिरी दिन 3 आर कलेक्शन ड्राइव चलाया गया। कलेक्शन ड्राइव में विद्यार्थियों ने अपने घर

से अनुपयोगी सामान लाकर जमा करवाया। यह अनुपयोगी सामान जस्तुतमंदों के काम आएगा। 3 आर कलेक्शन ड्राइव में संपूर्ण जिले के

विद्यालयों में विद्यार्थियों ने 70868 पुस्तकें, 13339 जूते, 10030 खिलौने, 8481 कपड़े और 4524 अन्य सामग्री जमा करवाई।

माँ व तीन बच्चों की पानी में डूबकर मौत मामला के मामले में नया मोड़, दहेज हत्या का मामला दर्ज

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के बन्धनाऊ गांव की रोही में शनिवार देर रात्रि को खेत में पानी में डूबने से माँ व तीन बच्चों की दर्दनाक मौत हो गई। मामले में महिला के पिता की ओर से पुलिस थाने में दहेज हत्या का मामला दर्ज करवाया गया है। धानाधिकारी मदनलाल बिश्नोई ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि शनिवार रात्रि को सूचना मिली कि गांव बंधनाउ में मां और तीन बच्चों की पानी की डिग्गी में डूबने से मौत हो गई है। मौके पर पहुंचकर शवों को बाहर निकलवाया गया और राजकीय अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया। धानाधिकारी ने बताया कि महिला के पिता भादासर निवासी भंवरलाल जाट ने रिपोर्ट दी है कि 2016 में मेरी पुत्री जेठी की शादी बंधनाउ निवासी सुभाष जाट के साथ हुई थी। शादी के बाद से ही सुभाष व उसका चाचा मुखराम मेरी बेटी जेठी को कम दहेज का ताना देकर परेशान करते थे। शादी के बाद मेरी बेटी जेठी के तीन संतान उत्पन्न हुई। शनिवार रात्रि को हमारे पास फोन आया की सुभाष ने अपनी पत्नी व तीनों पुत्र व पुत्री को मारपीट कर पानी की डिग्गी में डालकर हत्या कर दी है। जिस पर हम लोग बंधनाउ गांव पहुंचे और सूचना देकर मौके पर पुलिस बुलाया। पुलिस की मौजूदगी में मेरी बेटी 24 वर्षीय जेठी



पत्नी सुभाष, 6 वर्षीय इशिका, 4 वर्षीय आरुषी, 2 वर्षीय संजय को पानी से बाहर निकाला। रिपोर्ट में बताया कि चारों के शरीर पर चोट के निशान भी हैं। रिपोर्ट में बताया कि सुभाष ने उस वक्त सभी के सामने कहा कि मैंने इनको मारकर पानी में डाला है मेरे खिलाफ कोई कार्रवाई की तो सब को मार डालूंगा। सुभाष के चाचा मुखराम ने भी कहा कि इसके खिलाफ कार्रवाई की तो ठीक नहीं रहेगा। रिपोर्ट में बताया कि मेरी बेटी व उसकी तीन संतानों को हमारे जवाई सुभाष ने अपने चाचा मुखराम के साथ घड़यंत्र रचकर दहेज कम लाने व दहेज की मांग को लेकर मारपीट कर जान से मारकर पानी में डालकर हत्या की है। वहीं पुलिस ने परिजनों की मौजूदगी में सभी शवों का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सुपुर्द कर व मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरु कर दी है।

फ़ार्मर आईडी बनाने में तारानगर जिले में प्रथम स्थान पर

तारानगर(निस)। केंद्र सरकार की पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत बनने वाली फ़ार्मर आईडी में तारानगर ने अपना लक्ष्य अर्जित कर जिले में प्रथम स्थान पर रहा। राज्य सरकार के निर्देश पर ग्राम पंचायत व पंचायत समिति में शिविर लगा कर किसानों की फ़ार्मर आईडी बनाई गई। तारानगर तहसीलदार शुभम शर्मा ने बताया कि 60 ٪ से अधिक फ़ार्मर आईडी बना कर तारानगर प्रथम स्थान पर है और अब जो किसान वंचित रह गए हैं उनके लिए पटवारियों को डोर दू खेर जाकर वंचित किसानों की फ़ार्मर आईडी बनाने के लिए निर्देशित किया ताकि उन किसानों को केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ मिल सके। तहसीलदार शर्मा ने साथ ही गिरदावर व पटवारियों को निर्देशित किया कि फ़ार्मर आईडी किए कार्यों से नहीं बनी वो लिस्ट तैयार करवाए और आईडी बनाने में किसी तरह की समस्या आ रही है तो उन समस्याओं का समाधान कर किसान को उसकी आईडी बनवाए। तहसीलदार शर्मा ने किसानों से अपील की है कि लाभार्थी कृषक अपने गिरदावर सर्फिल में पटवारी के पास जाकर आईडी बनवा सकते हैं।